मानिला वाणी

मासिक ई-पत्रिका

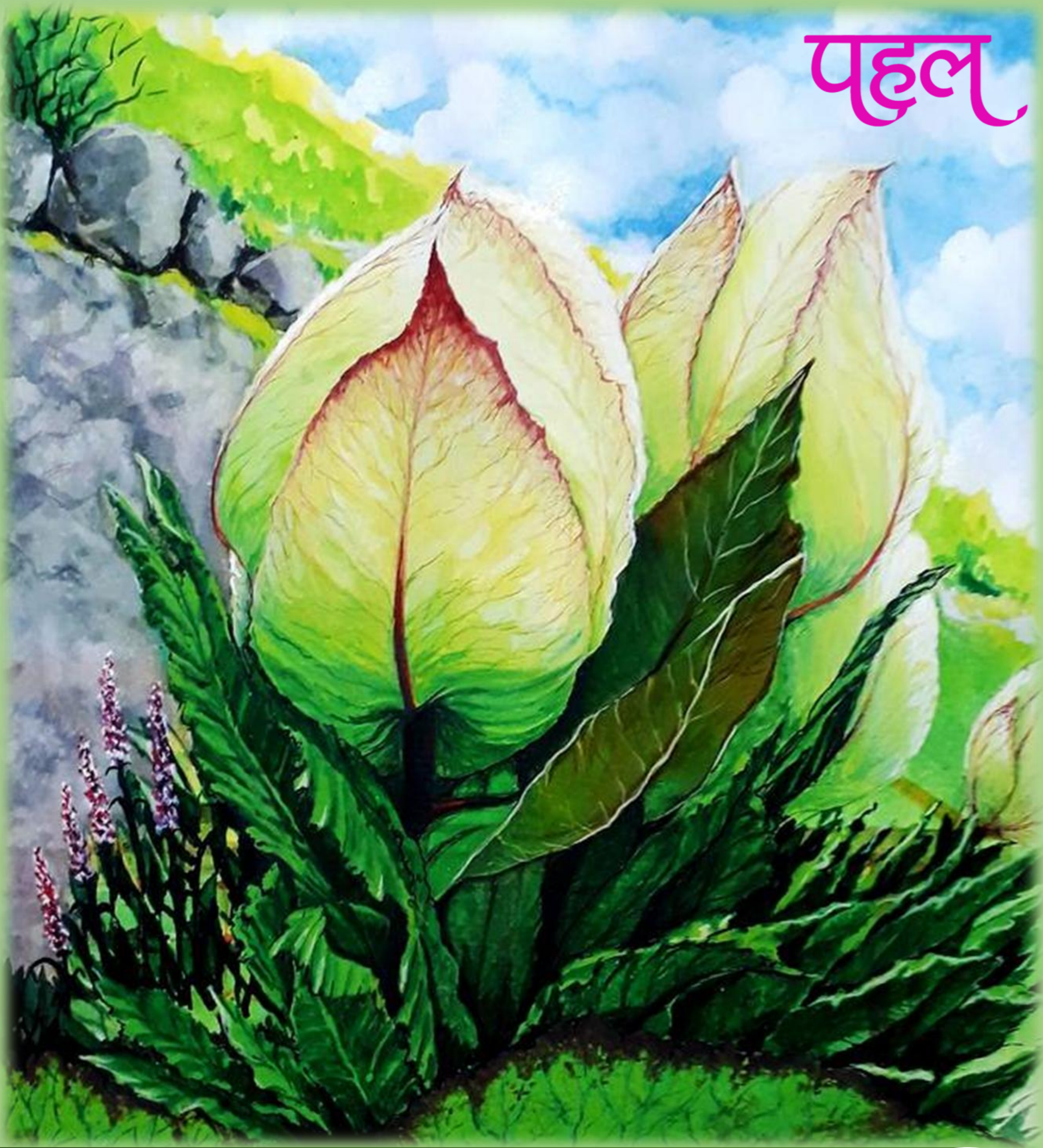

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार,
मानिला- 263 667 (अल्मोड़ा)

अंक- 01 । 2025-26

सितम्बर, 2025

महाविद्यालय का नैक मूल्यांकन प्रमाण-पत्र

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Government P. G. College
Manila, Almora, affiliated to Kumaun University, Uttarakhand as
Accredited
with CGPA of 2.01 on seven point scale
at B grade
valid up to March 27, 2022

Date : March 28, 2017

Director

EC(SC)/23/A&A/34.2

प्रो० जी० एस० यादव

(प्राचार्य)

सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है की शैक्षणिक वर्ष 2025-26 के सितम्बर माह से महाविद्यालय की प्रथम मासिक ई-पत्रिका 'मानिला वाणी' का प्रकाशन हो रहा है। इस अवसर पर मुझे छात्र-छात्राओं और पाठकों हेतु ई-पत्रिका को महाविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर प्रदर्शित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि यह ई-पत्रिका महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं, प्राध्यापकों एवं प्रशासनिक स्टाफ हेतु एक मनोरंजक और उपयोगी उपकरण साबित होगी।

मुझे यह भी विश्वास है कि यह ई-पत्रिका प्राध्यापकों एवं विद्यार्थिओ दोनों के लिए भविष्य में पत्रिका हेतु नियमित रूप से लेख लिखने हेतु प्रेरणा स्रोत बनेगी। मैं इस मासिक ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हेतु संयोजक एवं प्रकाशक समिति के सदस्यों को हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ।

(प्राचार्य)

डॉ० गोरखनाथ

(मुख्य शास्ता)

सन्देश

पत्रिका शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं द्वारा रचनात्मक रूप से पत्रिका में विभिन्न विषयों पर आधारित लेख प्रकाशित करने के अद्भुत प्रयासों का परिणाम होती है। आशा करता हूँ कि यह मासिक ई-पत्रिका शिक्षकों और छात्र-छात्राओं के भीतर छिपे कहानीकार, कवि, निबंधकार आदि प्रतिभाओं को उजागर करने में सफल होगी। महाविद्यालय की मासिक ई-पत्रिका के शुभारम्भ के सपने को साकार करने हेतु सम्पादन एवं प्रकाशन समिति इस कठिन परिश्रम में सफलता प्राप्त करेगी। मुख्य सम्पादक एवं समिति के सदस्यों को प्रथम मासिक ई-पत्रिका (सितम्बर 2025) के शुभारम्भ हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(मुख्य शास्ता)

सम्पादक की कलम से...

सन्देश

सर्वप्रथम हम महाविद्यालय की ओर से सत्र 2025-26 की मासिक ई-पत्रिका *‘मानिला वाणी’* के प्रथम संस्करण के विमोचन पर आप सभी को बधाई देते हैं। यह ई-पत्रिका ज्ञान के भण्डार के रूप में कार्य करेगी और छात्र-छात्राओं के उन विचारों को सामने लाएगी जो उनकी झिझक या ग्रामीण पृष्ठभूमि के कारण कहीं दबे रह गए हैं।

कहा जाता है कि महाविद्यालय के बिना ज्ञान सम्भव नहीं है। विद्यार्थी जीवन को जीवन का ‘स्वर्णिम काल’ माना जाता है। आज का विद्यार्थी करुणा, जिम्मेदारी, संवेदनशीलता एवं आत्मसम्मान की भावनाओं से युक्त एक अद्वितीय व्यक्तित्व है। अतः ये सभी अनुभव महाविद्यालय की पत्रिका में प्रतिबिंबित होते हैं। महाविद्यालय भले ही कितनी भी सफलता हासिल कर ले, किन्तु पत्रिका जैसे प्रकाशनों के बिना जनता को इसकी जानकारी नहीं हो पाती। पत्रिका गुमनाम नायकों और अनदेखे आख्यानों के नाम और वीरतापूर्ण कार्यों को उजागर करती है। ये छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक प्रयासों एवं पाठ्येतर गतिविधियों के प्रति उनके जुनून को दर्शाती है। उनके द्वारा निबन्ध, लघु कथाएँ, काविताएँ एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे जाते हैं, जिससे छात्रों में साहित्यिक रुचि विकसित होने में सहायता मिलती है।

छात्र-छात्राओं, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों की प्रतिभा को निखारने के लिए समर्पित टीम का हिस्सा बनकर हमें अत्यंत प्रसन्नता हुई। महाविद्यालय ई-पत्रिका के सम्पादन का कठिन कार्य सम्पादकीय बोर्ड के सदस्यों के सहयोग के बिना संभव नहीं होता पाता है। अतः ई-पत्रिका के सम्पादन का दायित्व हमें सौंपने हेतु हम महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० जी० एस० यादव जी का सहृदय आभार व्यक्त करते हैं।

अंततः हम उन सभी योगदानकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने अपने लेखों के जरिए इस मासिक ई-पत्रिका को सफल बनाया। हमें पूर्ण उम्मीद है कि इस माह की ई-पत्रिका एवं आगामी समस्त ई-पत्रिकाओं के पृष्ठ पाठकों हेतु बहुत ही रोचक होंगे।

सम्पादक मण्डल:
डॉ० शैफाली सक्सेना (प्रधान सम्पादक)
डॉ० जितेन्द्र प्रसाद (सह-सम्पादक)

विषयानुक्रमणिका

इस अंक में...

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	प्राचार्य की कलम से...	i
2.	मुख्य शास्ता सन्देश...	ii
3.	सम्पादक की कलम से...	iii
4.	महाविद्यालय एक नजर में...	1
5.	महाविद्यालय प्राचार्य कार्यकाल	2
6.	महाविद्यालय कुलगीत	3
7.	छात्र-छात्रा लेख	4-9
8.	प्राध्यापक लेख	10-32
9.	समसामयिकी	33-35
10.	सितम्बर माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रमुख प्रेरणादायी हस्तियाँ	36-39
11.	सितम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस	40-45
12.	सितम्बर माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व (एक जीवन परिचय)	46-48
13.	चित्र दीर्घा (महाविद्यालय उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ)	49-55
14.	कलाकृति अनुभाग	56-57
15.	कुछ अनुशंसित पुस्तकें	58
16.	देश दुनिया के कुछ रोचक तथ्य	59-60
17.	रोजगार समाचार	61

महाविद्यालय: एक नजर में...

'मानिला' क्षेत्र (जिसका अर्थ है 'मनमोहक') मानिला माता के मन्दिर (आदिशक्ति पीठ), स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में यहाँ के वीर बलिदानियों, सुप्रसिद्ध लोकगायक स्व० श्री हीरा सिंह राणा जी और अपनी अनुपम नैसर्गिक सुन्दरता के लिए जगत विख्यात है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1,820 मीटर है। यहाँ से दिखने वाली विशाल हिमालय की श्रृंखलाओं, बाँज, बुरांश, चीड़, देवदार, सुरई इत्यादि के जंगल और उनमें रहने वाले वन्य जीव, विशेषकर पक्षियों की विभिन्न प्रजातियाँ हमेशा से ही अन्यत्र स्थान वासियों को आकर्षित करता रही हैं। यह निकटतम रेलवे स्टेशन रामनगर से 85 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है और जिला मुख्यालय अल्मोड़ा यहाँ से 126 किलोमीटर की दूरी पर है।

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय से सम्बद्ध राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार, मानिला (अल्मोड़ा) 24 जुलाई, 1989 में राजकीय महाविद्यालय के रूप में स्थापित हुआ, जो लगभग 20,200 वर्ग मीटर (2.02 हेक्टेयर) में विस्तृत है। राष्ट्रीय स्तर पर यू०जी०सी० से मान्यता प्राप्त इस महाविद्यालय को वर्ष 2017 में नैक प्रत्यायन द्वारा 'B' ग्रेड प्राप्त है। महाविद्यालय में कला एवं विज्ञान संकाय के अन्तर्गत स्नातक स्तर की कक्षाएं संचालित होने के साथ-साथ वर्ष 2014-15 से हिन्दी, इतिहास, राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र विषयों में स्नातकोत्तर स्तर पर कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। साथ ही यह महाविद्यालय शोधार्थियों हेतु एक उभरते शोध केंद्र के रूप में विकसित हुआ है। केंद्र सरकार के सहयोग द्वारा रूसा परियोजनान्तर्गत महाविद्यालय में पुस्तकालय, वाचनालय, कॉन्फ्रेंस हॉल, जिम्नासियम, स्मार्ट क्लास एवं आई०टी० लैब विकसित की गई हैं; जो छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक विकास हेतु अतिमहत्वपूर्ण हैं। लगभग 11,134 पुस्तकों से लैस पुस्तकालय विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों को अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर की सन्दर्भ पुस्तकें, विषय पुस्तकें, एन्साइक्लोपीडिया, पत्रिकाएं, जर्नल्स इत्यादि की सुविधा प्रदान करता है। महाविद्यालय में गठित आई०सी०टी० सेल (पूर्व में एडुसेट) द्वारा विद्यार्थियों हेतु नियमित रूप से ऑनएयर व्याख्यान प्रसारित किए जाते हैं। महाविद्यालय की एन०एस०एस०, रोवर्स-रेंजर्स, यूथ रेड क्रॉस इकाइयाँ, कैरियर काउंसलिंग सेल एवं वर्चुअल प्रयोगशाला इत्यादि छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास हेतु हमेशा सक्रिय रहती हैं। महाविद्यालय का निरन्तर शैक्षणिक प्रगति की ओर अग्रसर होने का लक्ष्य प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं के अथक प्रयासों को परिलक्षित करता है।

(2)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुणीधार मानिला, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

स्थापना वर्ष: 1989

प्राचार्य कार्यकाल

क्र० सं०	प्राचार्य का नाम	से	तक
01	डॉ० श्यामलाल	25.08.1989	04.04.1991
02	प्रो० रामगनेश, प्रभारी	05.04.1991	10.05.1991
03	प्रो० दानीराम	11.05.1991	30.06.1993
04	प्रो० जी० आर० सेमवाल, प्रभारी	01.07.1993	30.07.1994
05	प्रो० बी० सी० उप्रेती, प्रभारी	01.08.1994	21.08.1995
06	डॉ० बी० एम० गुप्ता	22.08.1995	09.10.1995
07	डॉ० बी० एस० नेगी	10.10.1995	30.11.1995
08	डॉ० के० सी० बर्मा	01.12.1995	13.12.1995
09	प्रो० कमला शर्मा	14.12.1995	18.06.1997
10	डॉ० एम० एम० करगेती	19.06.1997	10.03.1999
11	डॉ० एम० एम० जोशी	11.03.1999	30.06.2000
12	डॉ० के० सी० पन्त	13.07.2000	04.02.2004
13	डॉ० जी० सी० पन्त, प्रभारी	05.04.2024	25.03.2004
14	डॉ० (श्रीमती) जी० प्रकाश	24.03.2004	13.08.2015
15	डॉ० कमला जोशी	13.08.2015	12.06.2017
16	डॉ० रेखा पाण्डे	12.06.2017	15.09.2018
17	डा० मधुलिका पाठक, प्रभारी	04.10.2018	25.01.2019
18	डॉ० ललित प्रभा शर्मा	25.01.2019	31.10.2020
19	डॉ० नरेन्द्र कुमार, प्रभारी	04.11.2021	11.01.2021
20	डॉ० जया पाण्डे	11.01.2021	28.02.2023
21	डॉ० नरेन्द्र कुमार, प्रभारी	10.03.2023	30.06.2023
22	डॉ० सीमा श्रीवास्तव, प्रभारी	21.07.2023	07.02.2024
23	डॉ० मोहन चन्द्र पाण्डे, प्रभारी	07.02.2023	21.11.2024
24	डॉ० गिरजा शंकर यादव	21.11.2024	–वर्तमान–

महाविद्यालय कुलगीत

ज्ञान का यह मन्दिर, मानिला की शान,
प्राकृतिक सुन्दरता से तू है सुसज्जित, महान।
चीड़, बुरांश, देवदार से घिरा, तेरा धाम,
कत्यूरियों की आध्यात्मिक भूमि, तुझे प्रणाम।

रामगंगा की धारा, करती तेरा प्रक्षालन,
हिमालय की पर्वतमाला, देती अद्भुत दर्शन।
मनमोहक नजारों से घिरी तेरी हर राह,
प्रकृति की गोद में मिलती ज्ञान की चाह।

कत्यूरी राजवंशियों की, आध्यात्मिक भूमि महान,
आदिशक्ति माँ मानिला का, पावन आलय तू प्रज्ञान।
वीर स्वतन्त्रता सेनानियों का, तू है अथक फल,
स्वतन्त्रता की गूंज से, करता जग निर्मल।

गुरु-शिष्य परम्परा का, होता यहाँ संगम,
कर्तव्य और मूल्यों का, सिखाते पाठ उत्तम।
प्राध्यापक और छात्र का, सामंजस्य यहाँ गहरा,
माँ सरस्वती का नित्य वंदन, ज्ञान वृक्ष की है छाया।

कला और साहित्य की, बहती यहाँ निर्मल धारा,
विज्ञान की अद्भुत लौ, करती दूर अँधियारा।
कौशल की शिक्षा भी, और क्रीड़ा का विकास,
विद्यार्थी के जीवन में, भरता है नव उल्लास।

"वसुधैव कुटुम्बकम" का, गूँजता यहाँ उद्घोष,
"सर्वे भवन्तु सुखिनः" का, जग में फैले संतोष।
सबके हित का सपना, यहाँ पाता है उड़ान,
कर्मभूमि मानिला, हो विश्व में तेरा मान।

हे ज्ञान के दीपक तुझे, कोटि-कोटि प्रणाम,
सदैव तेरा उत्कृष्ट हो, उज्ज्वल हो तेरा नाम।
विश्व में चमके महाविद्यालय हमारा, यही है पुकार,
मानिला महाविद्यालय, तू है ज्ञान का आधार।

–द्वारा रचित: डॉ० शैफाली सक्सेना

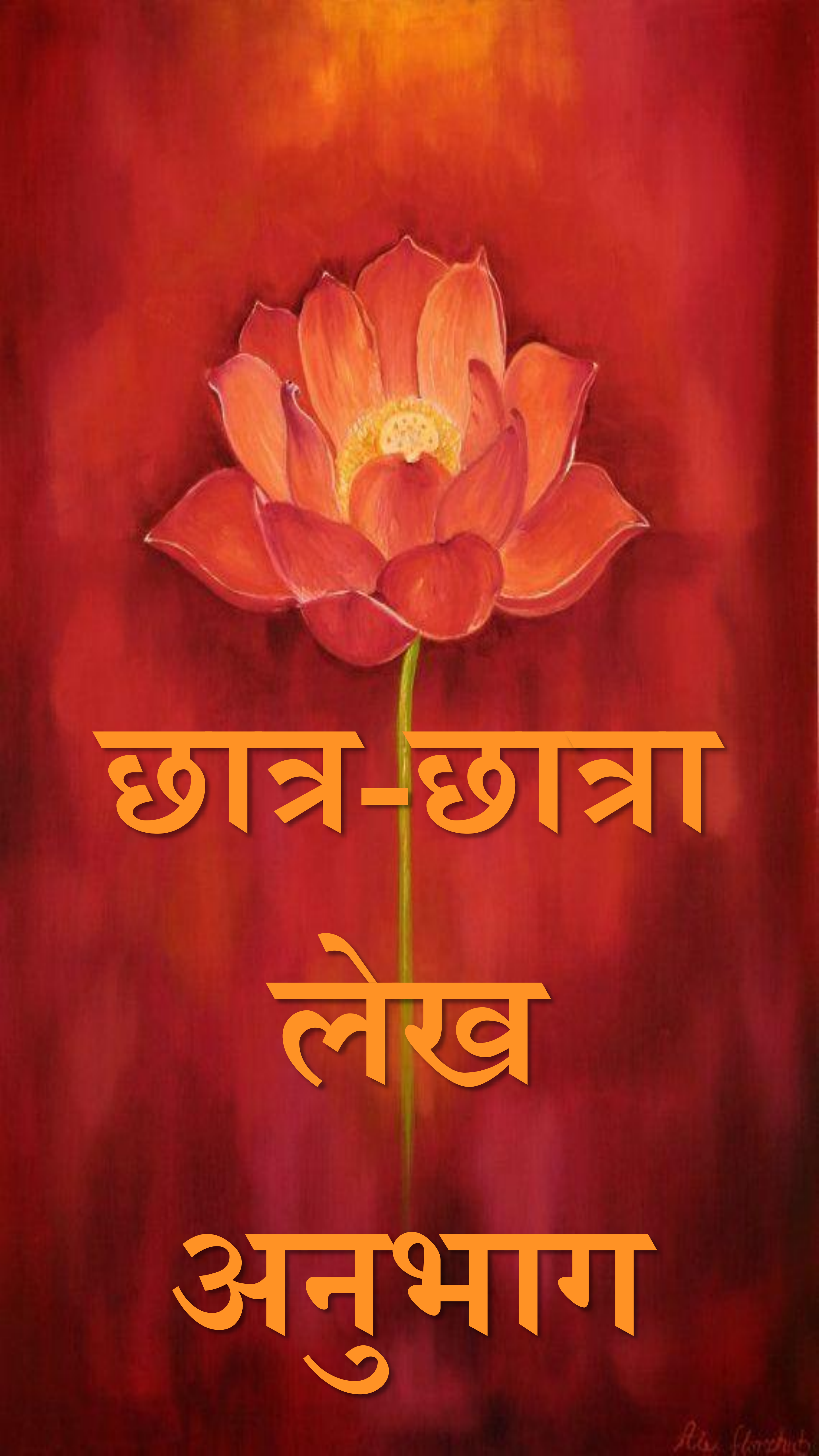

छात्र-छात्रा लेख अनुभाग

(4)

SAVE ENVIRONMENT

Saving environment is our duty,
It makes our life pretty.

City and town now filled with pollution,
Find and fix its early solution.

Let not pollute water and air,
And not throw garbage here and there.

Our true friends are trees,
More plant to increase.

Environment needs full of air,
Which always remains clean and clear.

Akanksha Rawat
(Alumni)

पेड़

जे ने होणो रे पेड़,
ते साँसों री पोड़ी जाली लेन-देन।

एक काटो आमे पेड़,
तो जिंदगी दी लागी जाली कुवेड़।

पेड़ काटी के प्रदूषण होला,
तो साँस कोइदां लोऊँगे खुला।
आमो सोबी रा नारा ओसो,
पेड़ लाणो रा काम म्हारा ओसो।

पेड़ देंओ, आमों के फल,
चिथ नामे चालो म्हारा कल।

जे ने देऊगें पेड़ो के पाणी,
तो फल कौथे दे खाणे होले।

जे ने होणो रे पेड़,
ते साँसों री पोड़ी जाली लेन-देन।

वन्दना शर्मा
(भूतपूर्व छात्रा)

(5)

मेरा वोट मेरा भविष्य

वोट है भविष्य का आधार,
होने न देंगे इसको बेकार।
मतदान करेगा हर व्यक्ति,
तभी बढ़ेगी देश की शक्ति।

लोकतन्त्र की विनती है,
हर एक वोट कीमती है।
हमारा वोट हमारा अधिकार,
बनने न दें इसको व्यापार।

लोकतन्त्र का आधार है वोट,
स्वार्थी उम्मीदवार को दें इस बार गहरी चोट।
जागरूकता अभी अधूरी है,
हर एक मत जरूरी है।

देश को आगे बढ़ाना होगा,
सही उम्मीदवार चुन कर लाना होगा।
मेरा वोट मेरा अधिकार,
नहीं करूंगी इसको बेकार।

हंसी
बी०एस-सी० तृतीय सेम०

भारत की दस सर्वाधिक शक्तिशाली महिलायें

- **निर्मला सीतारमण:** केन्द्रीय वित्त मन्त्री
- **नीता अंबानी:** फाउन्डर व चेयरपर्सन, रिलायन्स फाउण्डेशन
- **रेड्डी सिस्टर्स:** शोभना कामिनेनी, संगीता रेड्डी, प्रथा रेड्डी, सुनीता रेड्डी (अपोलो हॉस्पिटल एन्टरप्राइजेस)
- **रोशनी नादार मल्होत्रा:** चेयरपर्सन एचसीअल टेक
- **बेला बजरिया:** चीफ कंटेन्ट ऑफिसर, नेटफ्लिक्स
- **सुधा मूर्ती:** राज्य सभा सदस्य
- **सावित्री जिन्दल:** एमएलए, हिसार
- **ईशा अंबानी:** एक्सीक्यूटिव डाइरेक्टर, रिलायन्स रीटेल वेंचर्स लि०
- **गीता गोपीनाथ:** फस्ट डेप्यूटी एमडी, इन्टरनेशनल मोनेटरी फण्ड
- **कल्ली पुरी:** वाइस चेयरपर्सन, इंडिया टुडे ग्रुप

खुशबू
बी०एस-सी० तृतीय सेम०

माँ

क्या लिखूँ उस 'माँ' पर,
जिसने रचा है सृष्टि को।
उसे कलम कभी न लिख पाए,
जिस 'माँ' ने हमको जन्म दिया,
वह दूर कभी न हो पाए।

वो 'माँ' की मधुर मुस्कान,
उसकी वह बातें, उसका वह स्वरूप,
उसका हर बात को बिन कहे समझना,
हमारे रूठ जाने पर उदास होना,
हमारी गलती करने पर उसकी वह डाँट।

क्या-क्या नहीं है लिखने को?
कमी तो है, सिर्फ शब्दों की।
विश्लेषणों की, विचारों की,
क्या लिखूँ, लिखूँ कितना लिखूँ?
आखिर मैं थक हारकर,
इतना ही लिख पाता हूँ।

समुद्र की जितनी गहराई है,
नभ में जितने तारे हैं।
चन्द्रमा की चाँदनी है जितनी,
'माँ' तुमसे मोहब्बत उतनी है।

कार्तिकेय बिष्ट
बी०एस-सी० प्रथम सेमेस्टर

Shrink Words

THANKS

- Thank ('S' deleted)
- Think ('a' changed to 'i')
- Thing ('k' changed to 'g')
- Sing ('Th' changed to 'S')
- Sin ('g' deleted)
- In ('s' deleted)
- I ('n' deleted)

STOCK

- News refers to information from four direction: N, E, W and S.
- Wearing HEADPHONES for just an hour will increase bacteria in your ear by 700 times.
- Butterflies taste with their feet.
- The "Sixth sick sheik's sixth sick" is to be the toughest twister in the English language.
- This dog, is dog, a dog good dog, way dog, to dog, keep dog, an dog, idiot dog, busy dog, for dog, 30 dog, seconds dog.

  Now read it without the word dog.

Sapna
(Alumni)

Botany

A science green, a world unseen,
From root that grips to leaf serene.
The chlorophyll, a vibrant hue,
Turns sun and water, fresh and new.

Seed to sprout, a gentle arc,
A life cycle in the park.
The botanist, with gentle hand,
Unlocks the secrets of the land.

In every petal, bark and stem,
A living, vital, diadem.
For air and food, their silent plea,
The wondrous craft of Botany.

Shivani
B.Sc. 5th sem

Environmental Protection and Science

Environmental Protection is the vital practice of safeguarding our natural world from degradation caused by human activities.

Environmental Science, a multidisciplinary field, investigates these issues such as pollution, climate change, and deforestation; and develops solutions like waste reduction, sustainable energy, and conservation.

The Problem: Human Impact on the Environment

- **Pollution:** Industrial waste, vehicle emissions, and harmful chemicals degrade the quality of our air, water, and soil.
- **Deforestation:** The clearing of forests for agriculture and development destroys habitats, leads to soil erosion, and disrupts natural climate regulation.
- **Climate Change:** Burning fossil fuels releases greenhouse gases, trapping heat and causing global warming, which results in rising sea levels, altered weather patterns, and more frequent extreme weather events.

The Solution: Environmental Protection Through Science and Action

- **Environmental Science:** This interdisciplinary field uses knowledge from biology, chemistry, geology, and other sciences to understand environmental problems and create innovative solutions.
- **Sustainable Practices:** Reducing consumption, reusing materials, recycling waste, and conserving water and electricity are crucial individual actions.
- **Green Initiatives:** Promoting public transport, using renewable energy sources, and developing eco-friendly products help reduce our environmental footprint.
- **Conservation Efforts:** Afforestation (planting trees) helps absorb carbon dioxide and prevent soil erosion, while protecting forests and wildlife maintains vital ecosystems.

Why It Matters

- **Human Health:** A healthy environment is essential for human survival and well-being.
- **Ecological Balance:** Protecting the environment ensures the balance of nature and the health of the food chain and pollination processes.
- **Future Generations:** Responsible environmental stewardship is necessary to create a cleaner, greener, and more sustainable planet for future generations.

Babita
B.Sc. 5th sem

(9)

Environmental Pollution

Environmental Pollution is the introduction of harmful foreign elements, known as pollutants, into the natural environment, making it unhealthy for living beings and ecosystems.

Causes of Pollution

- **Industrialization and Urbanization:** Rapid growth in industries and cities leads to increased waste, emissions, and resource depletion, contaminating air, water, and soil.
- **Human Activities:** Uncontrolled use of vehicles, improper waste disposal, littering, and excessive use of chemicals in agriculture are major contributors.
- **Deforestation:** The clearing of forests contributes to air and soil pollution and reduces the planet's ability to absorb pollutants.

Effects of Pollution

Health Hazards:

- **Air pollution**: causes respiratory problems like asthma and bronchitis, heart diseases, and certain cancers.
- **Water pollution**: leads to various water-borne diseases.
- **Noise pollution**: can result in stress, sleep disturbances, and other health issues.

Environmental Damage:

- **Air pollution**: can damage the ozone layer and contribute to global warming.
- **Water pollution**: harms aquatic life and contaminates drinking water.
- **Soil pollution**: makes soil unhealthy, balances pH, and reduces its fertility for crops.

Solutions to Combat Pollution

- **Individual Actions:** Adopt eco-friendly habits like using public transport, reducing plastic consumption, and practicing recycling.
- **Governmental & Industrial Initiatives:** Governments should enforce stricter regulations on industries to control emissions and waste.
- Promoting tree plantation drives and renewable energy sources (solar, wind) is vital.
- Raising awareness among citizens about the importance of environmental protection.

Conclusion

Combating pollution requires collective effort from everyone. By adopting sustainable practices and holding industries accountable, we can work together to create a cleaner and healthier environment for ourselves and future generations.

Meenu
B.Sc. 5th sem

प्राध्यापक लेख अनुभाग

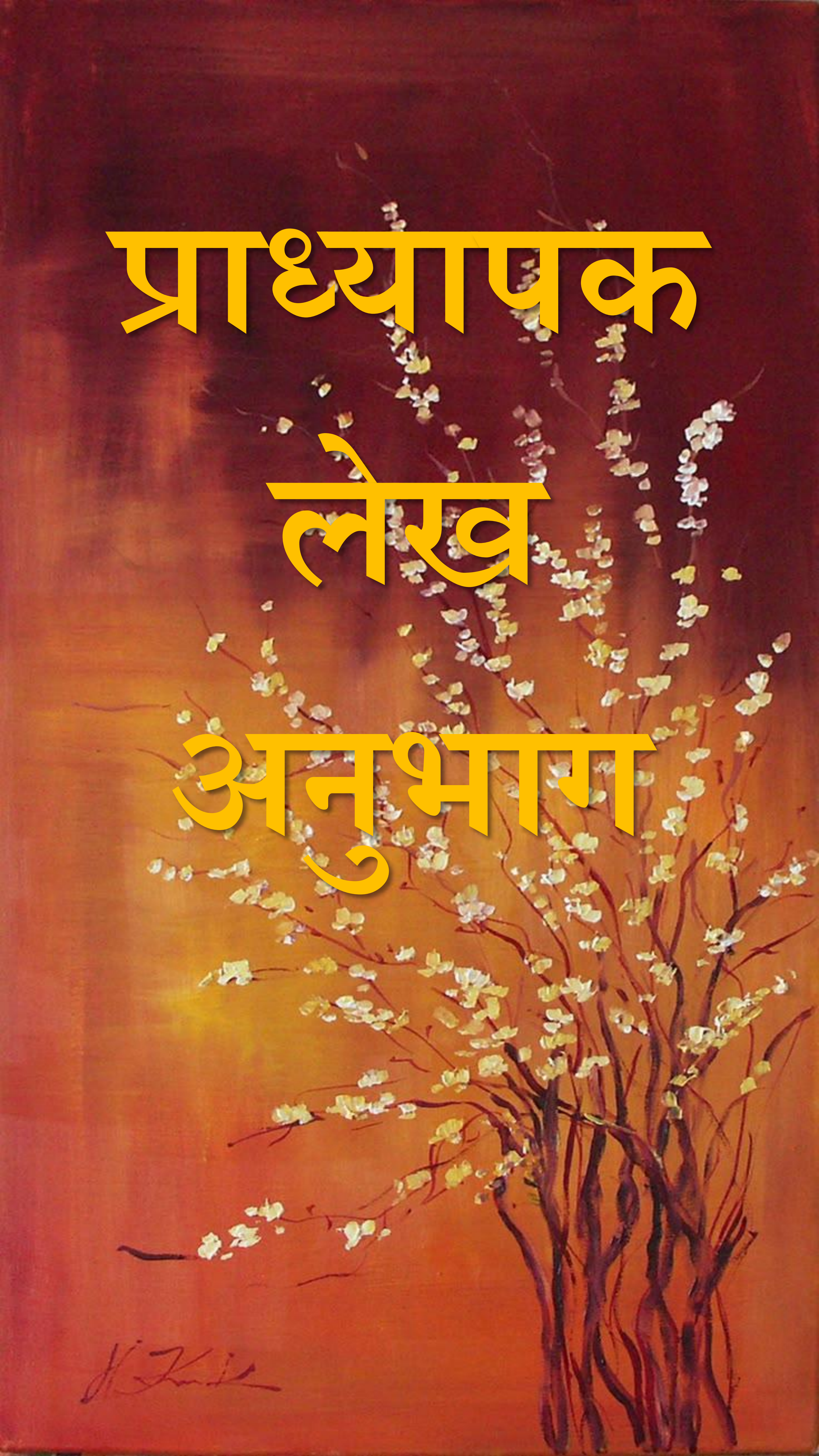

(2 मिनट का पठन)

कुमाऊँ का पारम्परिक परिधान पिछौड़ा का इतिहास

समूचे कुमाऊँ में शुभ अवसरों पर महिलाएं तेज पीले रंग पर गहरे लाल रंग से रंगी ओढ़नी पहने देखी जा सकती हैं, जो रंगाई पिछौड़ा अथवा रंगवाली पिछौड़ी कहलाती है, इसे सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। प्राचीनकाल में जब वस्त्राभरण सुगमता से उपलब्ध नहीं होते थे, तब पिछौड़े का निर्माण घर पर ही किया जाता था। इसके लिए रंगों का निर्माण भी लोग गृहोपयोगी संसाधनों से घर पर ही कर लिया करते थे। पीला रंग किलमोड़े की जड़ को पीसकर अथवा हल्दी से तैयार किया जाता था. लाल रंग बनाने के लिए महिलाएं कच्ची हल्दी में सुहागा और नींबू निचोड़कर दो-तीन दिन के लिए रख छोड़ती थी, तत्पश्चात उस मिश्रण को नींबू के रस के साथ पका लिया जाता था। इस प्रकार लाल रंग भी तैयार हो जाता था। लगभग तीन मीटर लम्बा और सवा मीटर चौड़ा सफेद सूती कपड़ा लेकर उसे गहरे पीले रंग में रंग लिया जाता था, रंगने के बाद उस वस्त्र को छाया में सुखा लेते थे, रंगांकन के लिए कपड़े के बीच में केन्द्र स्थापित कर खोरिया अथवा स्वास्तिक चिन्ह बनाया जाता था। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि स्वास्तिक एकदम बीचोंबीच बने। कुशल महिलाओं द्वारा ही रंगांकन कार्य किया जाता था, इसके चारों कोनों पर सूर्य, चन्द्रमा, शंख, घंटा आदि अलंकृत किए जाते। तदोपरान्त ताँबें अथवा चाँदी के सिक्के पर कपड़ा लपेटकर बांध लिया जाता तथा उसे लाल रंग में डुबोकर निश्चित दूरी पर वृत्तों का निर्माण किया जाता था।

हालाँकि इसकी उत्पत्ति का कोई सटीक प्रमाण उपलब्ध नहीं है, लेकिन ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि मध्यकाल में राजपूत रानियाँ अपने दरबारी परिधान के रूप में पिछौड़ा पहनती थीं। ग्रामीण महिलाएँ पारंपरिक रूप से सूती कपड़े को हल्दी और सिंदूर से रंगकर पिछौड़ा बनाती थीं। 19वीं सदी में ब्रिटिश शासन के दौरान, ब्रिटिश कपड़ा व्यापारियों ने ऑर्गेंडी कपड़े का इस्तेमाल शुरू किया, जिसने अंततः पिछौड़ा बनाने के लिए हाथ से बुने हुए सूती कपड़े की जगह ले ली। कुमाऊं क्षेत्र की यह पारंपरिक पोशाक पिछौड़ा, जिसे दुल्हन को उपहार स्वरूप दिया जाता है और विवाहित महिलाएं सभी शुभ अवसरों पर पहनती हैं, धीरे-धीरे दुनिया भर में प्रसिद्धि प्राप्त कर रही है। वर्तमान में औद्योगीकरण के प्रभाव के चलते मशीनों में कृत्रिम रंगों द्वारा बने पिछौड़ों से उत्तराखण्ड के बाजार पटे पड़े हैं और घर पर पिछौड़ा रंगने की कला धीरे-धीरे दुनिया से विदा लेती उत्कृष्ट पीढ़ी के साथ ही समाज से विदा लेने लगी है। शादी-ब्याह, नामकरण संस्कार, जनेऊ, पूजा-पाठ, सभी शुभ अवसरों पर परिवार की सभी महिलाएँ और रिश्तेदार पिछौड़ा धारण करती हैं। पिछौरा का मध्य भाग बहुत महत्वपूर्ण होता है। स्वास्तिक के चारों ओर बने सभी चार चिह्न भारतीय संस्कृति में शुभ माने जाते हैं। महिलाओं को उनकी शादी के दिन पिछौड़ा उपहार में दिया जाता है। इसके बिना उनका श्रृंगार अधूरा माना जाता है। धीरे-धीरे गढ़वाल में भी पिछौड़ा पहना जाने लगा है। अविवाहित महिलाएं पिछौड़ा नहीं पहनती हैं।

डॉ० खीला कोरंगा
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग

वित्तीय स्वतंत्रता

(4 मिनट का पठन)

जीवन भर हमारे मन में कई सपने आते रहते हैं। हम आराम से जीना चाहते हैं और यहाँ तक कि जल्दी रिटायरमेंट के बारे में भी सोचते हैं ताकि हम बिना काम किए जीवन का आनंद ले सकें। हालाँकि, इस रिटायरमेंट के साथ-साथ एक आरामदायक जीवन का आनंद लेने के लिए, वित्तीय स्वतंत्रता हासिल करना ज़रूरी है।

वित्तीय स्वतंत्रता' शब्द का सामान्य अर्थ उस स्थिति से है जिसमें किसी व्यक्ति को अपनी मनचाही जीवनशैली बनाए रखने के लिए नियमित नौकरी अथवा सक्रिय आय के अन्य स्रोतों की आवश्यकता नहीं होती और उसके पास अपनी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन, संपत्ति और निष्क्रिय आय होती है। वित्तीय स्वतंत्रता का सामान्य अर्थ है वित्तीय बाधाओं से बंधे बिना अपनी इच्छाओं और रुचियों को पूरा करने की स्वतंत्रता और परिवारिक जिम्मेदारियों या सेवानिवृत्ति जैसे भविष्य के उद्देश्यों के लिए पैसे बचाने और विवेकशील निवेश करने की क्षमता से हैं। इसमें बिना किसी तनाव या अपनी वित्तीय स्थिरता को प्रभावित किए आपात स्थितियों या खर्चों से निपटने के लिए वित्तीय लचीलापन भी शामिल हो सकता है।

आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए अनुशासन, योजना और सोच-समझकर दीर्घकालिक वित्तीय निर्णय लेना अक्सर ज़रूरी होता है। वित्तीय आज़ादी पाने के लिए कोई निश्चित समय-सीमा नहीं है। यह आपकी आय, खर्च, कर्ज़ के स्तर, बचत दर और जीवनशैली विकल्पों पर निर्भर करता है। कुछ लोगों को इसमें दशकों समय लग सकते हैं और कुछ को कुछ वर्षों तक ध्यान केंद्रित करना पड़ सकता है। सबसे ज़्यादा मायने रखती है निरंतरता। वित्तीय आज़ादी के लिए सही कदम उठाकर, कोई भी व्यक्ति दीर्घकालिक वित्तीय आज़ादी की ओर लगातार प्रगति कर सकता है।

वित्तीय आज़ादी का कोई शॉर्टकट नहीं है, लेकिन एक स्पष्ट रास्ता ज़रूर है। इसे व्यावहारिक और प्रबंधनीय चरणों में बाँटकर आप वित्तीय तनाव से वित्तीय आज़ादी की ओर बढ़ सकते हैं, चाहे आपकी शुरुआत कहीं से भी हो। यह खण्ड वित्तीय आज़ादी के लिए ज़रूरी कदमों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जैसे कि ऐसी आदतें, सोच और प्रणालियाँ बनाना जो स्थायी बदलाव को संभव बना सकें।

चाहें आप अभी शुरुआत कर रहे हों या अपनी रणनीति में सुधार करना चाह रहे हों, ये वित्तीय रूप से स्वतंत्र होने और दीर्घावधि के लिए अपने धन पर नियंत्रण पाने के प्रभावी तरीके हैं। जब आपकी निष्क्रिय आय, जैसे निवेश, बचत, या किराये की आय, पारंपरिक वेतन पर निर्भर हुए बिना, आपके ज़रूरी जीवन-यापन के खर्चों को लगातार पूरा करती है, तो आपने संभवतः वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है। आप अपने जीवन के फैसले अपनी क़ीमतों के आधार पर लेने के लिए स्वतंत्र हैं, न कि सिर्फ़ अपनी सक्रिय आय एवं क्षमता के आधार पर। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपने अपनी जीवनशैली को सहारा देने, जोखिमों का प्रबंधन करने और आत्मविश्वास के साथ अपने भविष्य की आवश्यकताओं तथा जिम्मेदारियों के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त वित्तीय सुरक्षा बना ली है।

वित्तीय स्वतंत्रता के लक्ष्य प्राप्ति हेतु निम्न छह चरण सहायक हो सकते हैं:

1. बजट बनाएँ: बजट वित्तीय स्वतंत्रता की ओर पहला कदम है। इसमें आपकी आय और व्यय पर नज़र रखना, यह पता लगाना कि आप कहाँ पैसे बचा सकते हैं, और बचत के लक्ष्य निर्धारित करना शामिल है। इससे आपको अपने वित्त की बेहतर समझ होगी और आप उन क्षेत्रों की पहचान कर पाएँगे जहाँ आप बजट बनाकर अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार कर सकते हैं।

2. कर्ज़ चुकाएँ: कर्ज़ के कारण आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना मुश्किल हो सकता है। क्रेडिट कार्ड के कर्ज़ और उच्च-ब्याज वाले ऋणों को खत्म करके बचत और निवेश को आसान बनाया जा सकता है। पहले उच्च-ब्याज वाले दायित्वों का ध्यान रखें और जहाँ तक संभव हो, नए दायित्वों (ऋणों) से बचें।

3. एक आरक्षित निधि बनाएँ: वित्तीय स्वतंत्रता पाने के लिए,एक आपातकालीन निधि बनाना ज़रूरी है। इस निधि का उपयोग आपके दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्यों को प्रभावित किए बिना अप्रत्याशित खर्चों को संभालने के लिए किया जा सकता है और यह कम से कम तीन से छह महीने के जीवन-यापन के खचर्चों को पूरा करने में सक्षम होनी चाहिए।

4. अपने भविष्य में निवेश करें: वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए, सेवानिवृत्ति बचत आवश्यक है। लक्ष्य अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा - 30 से 50 प्रतिशत के बीच बचाना और उसका उपयोग संपत्ति बनाने में करना है। इससे आपको सेवानिवृत्ति के बाद अपने खचों को पूरा करने के लिए पर्याप्त निष्क्रिय आय प्राप्त हो सकती है। आप एक सुखद दूसरी पारी के लिए पर्याप्त धन संचय करने हेतु मासिक निवेश राशि निर्धारित करने के लिए सेवानिवृत्ति कैलकुलेटर का उपयोग कर सकते हैं। निवेश धन संचय और आय-उत्पादक पोर्टफोलियो के विकास में सहायक हो सकता है। अपने निवेशों से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए, विविधता लाएँ और कम लागत वाले विकल्पों की तलाश करें। मान लीजिए कि आप एक बार में बड़ी राशि निवेश करना चाहते हैं; तो, ऑनलाइन टूल आपके निवेश के अनुमानित भविष्य मूल्य की गणना करने में आपकी मदद कर सकते हैं, जो इस बात पर आधारित है कि आपने कितना निवेश किया है, कितनी अवधि के लिए, और कितना रिटर्न अपेक्षित है।

5. अपने खर्च कम करें: अंततः, वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अपनी क्षमता से कम खर्च करना ज़रूरी है। इसमें आपके खर्च पर नज़र रखना, अनावश्यक खर्च से बचना और दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करना शामिल है।

6. आय का दूसरा स्रोत बनाएँ: वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के इच्छुक अधिकांश लोगों के लिए 9 से 5 की नौकरी से ज़्यादा की आवश्यकता हो सकती है। अगर आप अपनी जीवनशैली से समझौता किए बिना अपनी आय बढ़ाना चाहते हैं, तो कई स्रोतों से आय पर विचार करें। अतिरिक्त आय उत्पन्न करने के दो तरीके हैं। सक्रिय आय पहली रणनीति है। इसे फ्रीलांसिंग कंटेंट, टैक्सी चलाना, कैफ़े में काम करना आदि जैसे अतिरिक्त कार्यों से प्राप्त किया जा सकता है।

निष्क्रिय आय उत्पन्न करने का दूसरा तरीका। आप डिजिटल सामग्री बेच सकते हैं, एफिलिएट मार्केटर के रूप में काम कर सकते हैं, या निष्क्रिय आय अर्जित करने के लिए स्टॉक या म्यूचुअल फंड में निवेश कर सकते हैं। इसलिए, तय करें कि आपके लिए सबसे उपयुक्त क्या है और दूसरी आय शुरू करने की दिशा में छोटे-छोटे कदम उठाना शुरू करें।

इन चरणों का पालन करके, आप अपने वित्त पर नियंत्रण पा सकते हैं, अपना कर्ज़ कम कर सकते हैं, एक आपातकालीन निधि बना सकते हैं, सेवानिवृत्ति के लिए बचत कर सकते हैं, समझदारी से निवेश कर सकते हैं और अपनी क्षमता से कम खर्च कर सकते हैं। ये कदम आपको वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने और एक समृद्ध, अधिक संतोषजनक और समृद्ध जीवन जीने में मदद कर सकते हैं। इससे आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं, आराम से जीवन जी सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक विरासत छोड़ सकते हैं।

"म्यूचुअल फंड निवेश बाजार जोखिमों के अधीन हैं, योजना से संबंधित सभी दस्तावेजों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।"

डॉ० गोरख नाथ
असिस्टेंट प्रोफेसर
अर्थशास्त्र विभाग

पलायन

'उत्तराखण्ड की खामोश चीख'

हिमालय की गोद में बसे उत्तराखण्ड के मनोहर गाँव जो कभी जीवन से भरे थे- लोकगीतों की गूँज, खेतों में उल्लास और हुड़की बौल, जानवरों को चराने जाते बूबू और बाँसुरी की मधुर धुन, सुबह और शाम घस्यारियों की आती-जाती कतारें, दाणी और अड्डू खेलते बच्चों की टोलियाँ और कुल देवताओं की पूजा से पवित्र पावन धरती। आज वही पहाड़ी गाँव, खामोश चीख बनकर हमारी चेतना में गूँज रहे हैं। यह खामोश चीख है- पलायन की चीख। यह केवल आर्थिक संकट नहीं बल्कि पर्वतीय संस्कृति के विघटन और विखण्डन की गाथा का आरम्भ है। कुछ खण्डहर हुए घरों के बीच बचे घरों के दरवाज़ों पर लगे हुए ताले, खेतों में पसरा जंगली सन्नाटा और बूढ़ी आँखों में फ़ूलदेई करते नाती-पोतों का इंतजार, यह केवल जनसंख्या का स्थानान्तरण नहीं बल्कि संस्कृति, सामूहिक स्मृति और भावनाओं का पलायन है।

पलायन का भयावह सत्य

उत्तराखण्ड पलायन आयोग के 2018-2022 के आँकड़े एक चौंकाने वाली तस्वीर प्रस्तुत करते हैं: पहाड़ी जिलों में 1,700 से अधिक गाँव ऐसे हैं जहाँ आबादी 10 से भी कम रह गई है, 3,500 गाँवों में पचास से कम लोग बचे हैं। पिछले 10 वर्षों में 5 लाख से अधिक लोग प्रदेश छोड़ चुके हैं, पौड़ी गढ़वाल में 331 गाँव भूतहा गाँव (घोस्ट विलेज) बन चुके हैं, 3,83,726 लोग अस्थायी रूप से पलायन कर चुके हैं। ये संख्यात्मक सूचनायें केवल आँकड़े नहीं हैं- ये उजाड़ हुई बाखलियों के हजारों परिवारों की टूटी उम्मीदों, बिखरे सपनों और छूटे रिश्तों की दास्तान हैं।

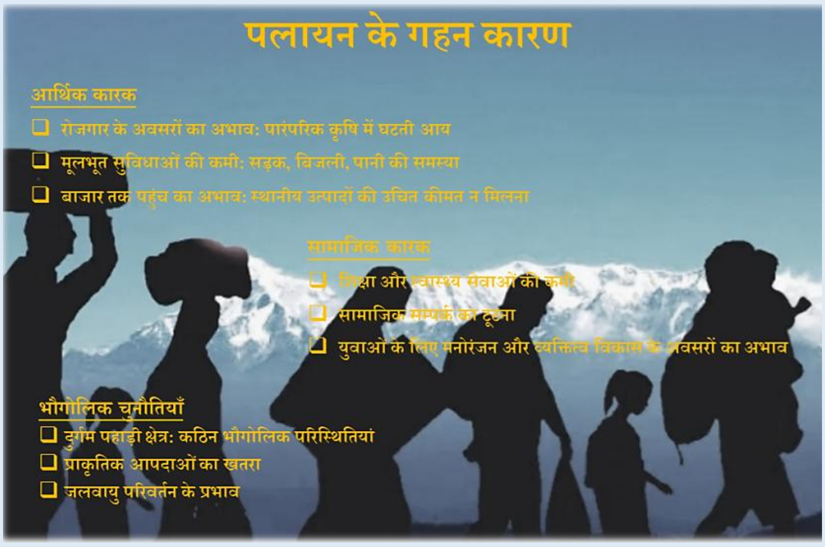

संकट की गहराई : पलायन के पीछे का दर्द

अधिकांश गाँवों में अब केवल बुजुर्ग और महिलाएँ शेष रहे हैं। युवा रोज़गार, शिक्षा, स्वास्थ्य या बेहतर जीवन के लिए मैदानी इलाकों, महानगरों की ओर निकल गए हैं। एक गाँव की आमा ने अपने जीवन की व्यथा यूँ बाँटी- "कोई शहर अपने मन से नहीं आता, गरीबी मजबूर कर देती है। पहाड़ में जीना चाहते हैं, वहीं मरना चाहते हैं, शिक्षा, स्वास्थ्य, उत्तम रहन-सहन जैसी बुनियादी सुविधायें और खेती का नष्ट होना या बार-बार की प्राकृतिक आपदाएँ, पलायन के निर्णय की मूल वजह बनती हैं।

नैतिक विमर्श: पलायन और सामाजिक जिम्मेदारी

1. **मानवीय गरिमा का प्रश्न:** पलायन केवल विकास और पिछड़ेपन का आँकड़ा नहीं है, यह मानवीय गरिमा का प्रश्न है। क्या हमारे ग्रामीणों को भी वही शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका के अवसर प्राप्त नहीं होने चाहिए, जैसे महानगरों में हैं? सरकारी नीतियों और प्रकृति दोनों के प्रतिकूल प्रभावों के चलते आशाओं की नाव की पतवार छूट जाती है। बुनियादी सुविधाओं का अभाव, जल संकट, जंगली जीवों का डर और खेती के लिए अनुदान या बाज़ार का अभाव उन्हें जड़ से उखाड़ देता है।

2. **सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण:** पलायन के साथ उत्तराखण्ड का सांस्कृतिक विवेक भी संकट में पड़ जाता है। हजारों वर्षों से चले आ रहे लोक गीत, कहानियाँ, पर्व-त्योहार, पारम्परिक कारीगरी, देवी-देवताओं की पूजा- इन सबका भविष्य अधर में लटक जाता है। पर्वतीय संस्कृति की आत्मा सहिष्णुता, कठिन श्रम, सादगी और प्रकृति-पूजन में है। जब गाँव खाली होते हैं तो यह बुनियादी मूल्य भी जड़ता की गिरफ्त में चले जाते हैं।

समाधान की दिशा में बढ़ते कुछ कदम

1. **सामुदायिक सशक्तिकरण:** पलायन को रोकने और रिवर्स पलायन को प्रोत्साहित करने का सबसे बड़ा नैतिक उत्तर है—स्थानीय नेतृत्व और समुदाय का सशक्तिकरण। गाँवों के निर्णय, योजनाएं और संसाधन स्थानीय पंचायतों के हाथ में हों। ग्रामीणों को स्वावलम्बी बनाने के लिए स्वयं सहायता समूह, महिला संगठन, और युवाओं के नेतृत्व की आवश्यकता है।

2. **आजीविका के स्थानीय अवसर:** रोज़गार के बिना जीवन असम्भव है। पहाड़ में पर्यटन, जैविक खेती, हस्तशिल्प, होमस्टे, पशुपालन, फल-फूल और औषधीय पौधों की खेती- इन सबको नैतिक दृष्टि से बढ़ावा देना चाहिए ताकि लोग अपनी जमीन पर स्वाभिमान से रह सकें।

3. **बुनियादी सुविधाओं का समान विस्तार:** शिक्षा, स्वास्थ्य, जल, बिजली, सड़क, और इन्टरनेट जैसी सुविधाएँ हर गाँव तक पहुँचे, यह केवल नीति नहीं- नैतिक दायित्व है। जब बच्चों को शिक्षा, बुजुर्गों को स्वास्थ्य और महिलाओं को सुरक्षा मिलेगी, तब ही पलायन रुकेगा।

4. **सांस्कृतिक पुनरुत्थान:** स्थानीय पर्व, गीत, नृत्य, कला, वेशभूषा और भोजन की विरासत को जीवंत रखना नैतिक और सामाजिक उत्तर है। पहाड़ी विवेक, प्राकृतिक प्रवृत्ति (Natural Instincts), प्रकृति-पूजन, सह-अस्तित्व और

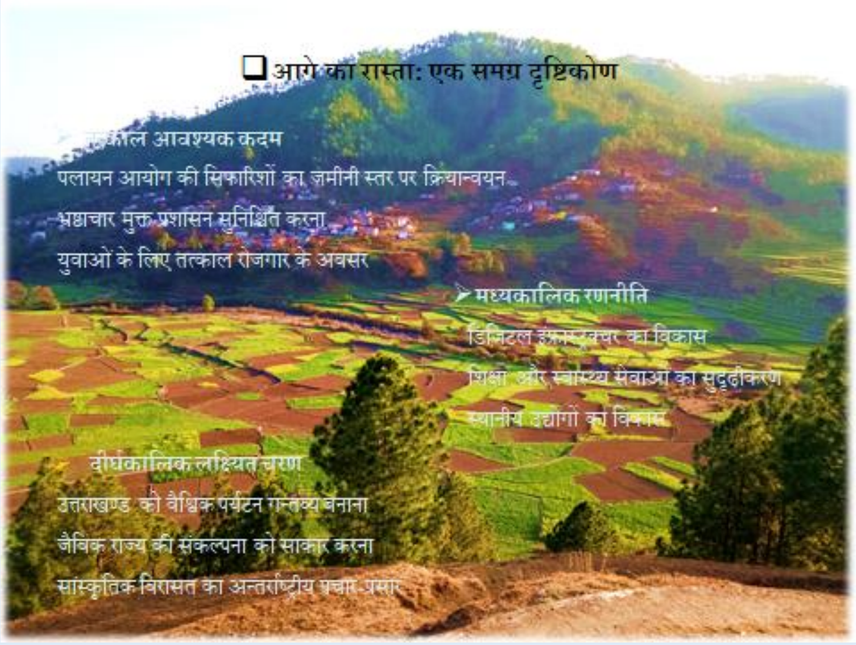

सरलता में निहित है, जो बाहरी दुनिया के लिए भी सीख है

5. **पर्यावरणीय सन्तुलन और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण:** जल, जंगल, ज़मीन की सुरक्षा और पर्यावरणीय सह-अस्तित्व न सिर्फ आर्थिक समाधान, बल्कि नैतिक उत्तर भी है। प्रकृति है तो व्यक्ति है, गाँव है, संस्कृति है- यह चेतना पहाड़ों की हृत्स्पन्द है।

6. **महिलाओं का सशक्त नेतृत्व:** उत्तराखण्ड की महिलाएँ- पृथ्वी, जल, अग्नि और जीवन की सच्ची अभिव्यक्ति हैं। उनके श्रम, प्रबन्धन और नेतृत्व को मान्यता देना और निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी बढ़ाना समाधान का अभिन्न भाग होना चाहिए।

आशा से समृद्धि की ओर

उत्तराखण्ड के पहाड़ों में पलायन एक नैतिक परीक्षा है। क्या हम सामूहिकता, आस्था, संस्कृति और प्रकृति के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं? संकट केवल विकास की विफलता नहीं, बल्कि समुदाय की चेतना का भी है। हल भी वहीं से निकलेगा- जड़ों (संस्कृति) के प्रति गर्व, लोक-संसाधनों की सुरक्षा और सामाजिक सहभागिता में सभी का प्राण। हर गाँव, हर व्यक्ति, हर परम्परा को सम्मान दो। पहाड़ों की खामोश चीख को सुनो और जड़ों से जुड़े रहना, आत्मा की सच्ची प्रगति है।

'रामी बौराणी' की कहानी आज भी उत्तराखण्ड की हर महिला में जीवित है, जो अपने पति के लौटने का इन्तजार करती है। 'पहाड़ की महिलाएं' आज भी वही त्याग, समर्पण और धैर्य दिखा रही हैं। उनकी इस शक्ति को पहचानना और उसका सम्मान करना हमारा नैतिक दायित्व है। पलायन के संकट का समाधान उन्हीं नैतिक मूल्यों में छुपा है जो सदियों से पहाड़ों की आत्मा में निहित हैं- सह-अस्तित्व, सादगी, संघर्ष और संयम। जब तक इन मूल्यों को व्यवहार में नहीं लाया जाएगा, तब तक संगठित समाधान अधूरा रहेगा। हमें सामाजिक बाधाएँ, शहरी जीवनशैली के आकर्षण, युवाओं में गाँव के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण और सामाजिक स्थिति की चिन्ता को त्याग कर सकारात्मक पहल करनी होगी।

उम्मीद अभी बाकी है... 2025 के सर्वे के अनुसार- 5000 से अधिक लोग पिछले 7 वर्षों में वापस लौटे हैं। अधिकांश स्वरोजगार में लगे हुए हैं। सरकार रिवर्स पलायन नीति पर विशेष ध्यान दे रही है। होमस्टे व्यवसाय की सफलता, जैविक खेती की संभावनाएँ और सामुदायिक पर्यटन के अवसर यह सिद्ध करते हैं कि पहाड़ों में जीवन अभी भी सम्भव है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब हम इस समस्या को मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय और नैतिक मूल्यों के दृष्टिकोण से देखें। पलायन रोकना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है- यह हम सभी का सामूहिक दायित्व है। उत्तराखण्ड के पहाड़ केवल भौगोलिक संरचनाएँ भर नहीं हैं- ये हमारी आस्था, जीवित संस्कृति, सामूहिक स्मृति और सामूहिक चेतना के केन्द्र और अस्तित्व के स्तम्भ हैं। इन्हें पुनर्जीवित करना, संरक्षित करना और भविष्य के लिए सुरक्षित रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। इन्हें बचाना केवल पर्यावरण संरक्षण नहीं, बल्कि मानवीय सभ्यता का संरक्षण भी है। इसके लिए आवश्यकता है राजनीतिक इच्छाशक्ति, प्रशासनिक दृढ़ता, सामुदायिक एकजुटता और व्यक्तिगत प्रतिबद्धता की। जब ये सभी शक्तियाँ मिलकर काम करेंगी, तभी हम उत्तराखण्ड के भूतहा गाँवों में फिर से जीवन की सुमधुर धुन सुन सकेंगे।

पहाड़ों की यह चुनौती हमारी मानवीयता की परीक्षा है और हमें इस परीक्षा में सफल होना है। "जब तक पहाड़ों में एक भी घर सूना है, तब तक हमारा विकास अधूरा है। जब तक एक भी युवा अपनी मातृभूमि छोड़ने पर मजबूर है, तब तक हमारी प्रगति अर्थहीन है।"- **उत्तराखण्ड की आत्मा की आवाज।**

डॉ0 जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और साइबर सुरक्षा: भविष्य की तकनीक और सुरक्षा

21वीं सदी को तकनीकी क्रांति का युग कहा जाता है। आज के इस दौर में इंटरनेट और डिजिटल साधनों ने हमारे जीवन को पूरी तरह से बदलकर रख दिया है। अब दिन की शुरुआत मोबाइल पर समाचार पढ़ने से होती है और ऑनलाइन बैंकिंग, डिजिटल भुगतान जैसी सेवाएँ हमारी दिनचर्या का सामान्य हिस्सा बन गई हैं। आज की इस पीढ़ी में आमतौर पर देखा गया है कि गूगल पर जानकारी खोजना, सोशल मीडिया पर सक्रिय रहना और विभिन्न ऐप्स के जरिए काम करना अब समय की सबसे जरूरी जरूरत बन गया है। इस बदलते तकनीकी समय में शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और सरकारी सेवाओं सहित अनेक क्षेत्रों में डिजिटलीकरण के कारण न केवल कार्यों में पारदर्शिता आई है, बल्कि गति और विश्वसनीयता में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। परंतु, जैसा कि हम सभी भली-भाँति जानते हैं कि हर अच्छी चीज़ के साथ कुछ बुराइयाँ भी आती हैं, उसी प्रकार इन डिजिटल सुविधाओं के साथ-साथ साइबर अपराधों में भी तेज़ी से वृद्धि हुई है। आजकल लगभग हर दिन समाचारों में यह सुनने को मिलता है कि किसी व्यक्ति के बैंक खाते से पैसे उड़ा लिए गए, फिशिंग ईमेल के माध्यम से धोखाधड़ी की गई, या फिर डीपफेक वीडियो के जरिए लोगों को ठगा गया। इन घटनाओं से यह साफ़ होता है कि जैसे-जैसे तकनीक ने हमारी ज़िंदगी को आसान बनाया है, वैसे-वैसे साइबर खतरों ने भी उतनी ही तेज़ी से अपने पैर पसारे हैं। हाल ही में कई ऐसी घटनाएँ सामने आई हैं, जो यह दिखाती हैं कि अब साइबर अपराध सिर्फ व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने संगठित रूप ले लिया है। उदाहरण के तौर पर, **KiranaPro** जैसे ग्रोसरी स्टार्टअप पर साइबर हमला यह बताता है कि अब छोटे और मध्यम व्यवसाय भी अपराधियों के निशाने पर हैं। वहीं, AI-सक्षम रैनसमवेयर गैंग्स का प्रयोग यह दर्शाता है कि अपराधी अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिससे उनके हमले पहले से कहीं अधिक सटीक और खतरनाक हो गए हैं। इसी तरह **"ShadowLeak"** नामक हमले ने यह साबित किया कि डेटा चोरी और लीक अब एक संगठित नेटवर्क के अंतर्गत किए जा रहे हैं, जहाँ लाखों लोगों की निजी जानकारी अंधेरे वेब पर बेची जा रही है।

दूसरी ओर, आम लोगों को निशाना बनाने वाले स्कैम्स भी लगातार बढ़ रहे हैं ये सभी घटनाएँ मिलकर यह संकेत देती हैं कि आज साइबर अपराध पारंपरिक धोखाधड़ी से कहीं आगे निकल चुके हैं। अब ये तकनीक, मनोविज्ञान और डर तीनों का मिलाजुला इस्तेमाल कर आम नागरिकों और व्यवसायों को निशाना बना रहे हैं। ऐसे में, जागरूकता, सतर्कता और आधुनिक साइबर सुरक्षा उपायों को अपनाना समय की सबसे बड़ी ज़रूरत बन चुका है। हाल ही में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई, जिसमें लोगों को बिजली विभाग के नाम से फर्जी SMS भेजे गए। उसमें लिखा था कि समय पर बिल का भुगतान न होने के कारण बिजली कनेक्शन काट दिया जाएगा। उस मैसेज में एक लिंक था जिस पर क्लिक करने से लोग एक फर्जी वेबसाइट पर पहुँच गए और उनके बैंक खातों से लाखों रुपये साफ हो गए। डर का फायदा उठाकर साइबर ठग लोगों को जाल में फँसाते हैं। इसी तरह एक नया फ्रॉड **"डिजिटल अरेस्ट"** के नाम से सामने आया। इसमें साइबर अपराधी लोगों को ईमेल या व्हाट्सएप कॉल के माध्यम से पुलिस अधिकारी बनकर धमकाते हैं और कहते हैं कि उनके खिलाफ कोई केस दर्ज है। मामले को रफा-दफा करने के लिए पैसे मांगे जाते हैं। कुछ मामलों में अपराधी पुलिस की वर्दी पहनकर वीडियो कॉल तक करते हैं जिससे लोग आसानी से विश्वास कर लेते हैं और ठगी का शिकार बन जाते हैं। यह फ्रॉड इसलिए ज़्यादा खतरनाक है क्योंकि इसमें तकनीकी धोखे के साथ-साथ मानव मनोविज्ञान का गहरा इस्तेमाल किया जाता है। जब कोई आम व्यक्ति खुद को निर्दोष समझता है और फिर अचानक उसे बताया जाता है कि वह किसी कानूनी मुसीबत में फँस गया है, तो वह घबरा जाता है और जल्दी से निर्णय ले लेता है। अपराधी इसी घबराहट का फायदा उठाते हैं। "डिजिटल अरेस्ट" स्कैम यह दिखाता है कि आज साइबर ठग न सिर्फ तकनीक में माहिर हैं, बल्कि लोगों के दिमाग और भावनाओं को भी बारीकी से समझते हैं। इससे बचने का एकमात्र तरीका है सतर्कता, जागरूकता और पुष्टि। इन बढ़ते खतरों के बीच आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) एक उम्मीद की किरण बनकर उभरा है। AI तकनीक अब साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह तकनीक संदिग्ध गतिविधियों की पहचान कर सकती है, फर्जी लिंक और कॉल को ट्रैक कर सकती है तथा यूज़र्स को पहले से चेतावनी दे सकती है।

साइबर सुरक्षा में AI की भूमिका

आज के डिजिटल युग में साइबर फ्रॉड तेजी से बढ़ता हुआ अपराध है, जो व्यक्तिगत डेटा की चोरी, फाइनेंशियल फ्रॉड, फिशिंग, स्पूफिंग, और नकली वेबसाइट्स के माध्यम से लोगों और संस्थानों को नुकसान पहुँचाता है। इस चुनौती से निपटने के लिए पारंपरिक सुरक्षा उपाय जैसे पासवर्ड, एंटीवायरस या फायरवॉल अब पर्याप्त नहीं रह गए हैं। ऐसे में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) एक प्रभावशाली समाधान के रूप में उभरा है, जो न केवल खतरों को पहचानता है बल्कि उनसे निपटने की सक्रिय रणनीति भी अपनाता है। AI का सबसे प्रमुख लाभ इसकी **Machine Learning (ML)** क्षमता है, जिसके जरिए यह सिस्टम उपयोगकर्ताओं के व्यवहार को समझता है। जैसे कि कोई ग्राहक सामान्यतः किस स्थान से लेन-देन करता है, किस डिवाइस का उपयोग करता है, और कितनी राशि तक के ट्रांजैक्शन करता है AI इन सभी डेटा पॉइंट्स का विश्लेषण करके एक **"नॉर्मल बिहेवियर पैटर्न"** तैयार करता है। जब भी कोई गतिविधि इस पैटर्न से अलग होती है, जैसे कि अचानक किसी दूसरे देश से बड़ा ट्रांजैक्शन या बार-बार पासवर्ड फेल होना, तो AI इसे तुरंत संदिग्ध गतिविधि मानकर अलर्ट भेजता है या लेन-देन को रोक देता है। इसके अलावा, AI में **Natural Language Processing (NLP)** तकनीक का उपयोग करके फिशिंग ईमेल, मैसेज और स्पैम कंटेंट को पहचानने की भी क्षमता होती है। यह तकनीक संदेशों में प्रयुक्त भाषा, लिंक और संदिग्ध अटैचमेंट्स को स्कैन करती है और उपयोगकर्ता को किसी भी संभावित धोखाधड़ी से पहले ही सावधान कर देती है। यही नहीं, AI आधारित सिस्टम खुद से सीखते हैं यानी जैसे-जैसे नए साइबर फ्रॉड के तरीके सामने आते हैं, ये सिस्टम पहले के अनुभवों से उन्हें समझते हैं और भविष्य के खतरों का अनुमान लगाने में सक्षम होते हैं। AI आधारित सुरक्षा प्रणाली में रियल-टाइम मॉनिटरिंग की सुविधा होती है, जो हर एक गतिविधि को बिना रुके ट्रैक करती है। जैसे ही कोई अनियमितता सामने आती है, AI सेकंडों में रिस्पॉन्स देता है।

निष्कर्ष

आज की डिजिटल दुनिया जितनी सुविधाजनक और तेज़ हो गई है, उतनी ही जटिल और असुरक्षित भी होती जा रही है। साइबर अपराध अब केवल तकनीकी धोखाधड़ी तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वे मानव मनोविज्ञान और भावनाओं का भी गहराई से उपयोग करने लगे हैं। ऐसे समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) न केवल इन खतरों की पहचान करने में मदद कर रहा है, बल्कि उनका सक्रिय समाधान भी प्रस्तुत कर रहा है। AI की मशीन लर्निंग और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग जैसी तकनीकें आज फिशिंग, फर्जी कॉल, डेटा लीक, और रियल-टाइम फ्रॉड डिटेक्शन में क्रांतिकारी भूमिका निभा रही हैं। परंतु केवल तकनीक ही पर्याप्त नहीं है। जब तक आम नागरिक और संस्थाएँ जागरूक, सतर्क और तकनीकी रूप से शिक्षित नहीं होंगे, तब तक AI जैसी तकनीकों की क्षमता भी सीमित रह जाएगी। इसलिए, आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है तकनीक और मानवीय समझ का संतुलित उपयोग। यदि हम ज़िम्मेदारी से डिजिटल टूल्स का प्रयोग करें और AI जैसी उन्नत तकनीकों को सही दिशा में इस्तेमाल करें, तो हम न केवल साइबर खतरों से खुद को सुरक्षित रख सकते हैं, बल्कि एक अधिक सुरक्षित और विश्वसनीय डिजिटल भविष्य की ओर भी बढ़ सकते हैं।

डॉ० महेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
रसायन विज्ञान विभाग

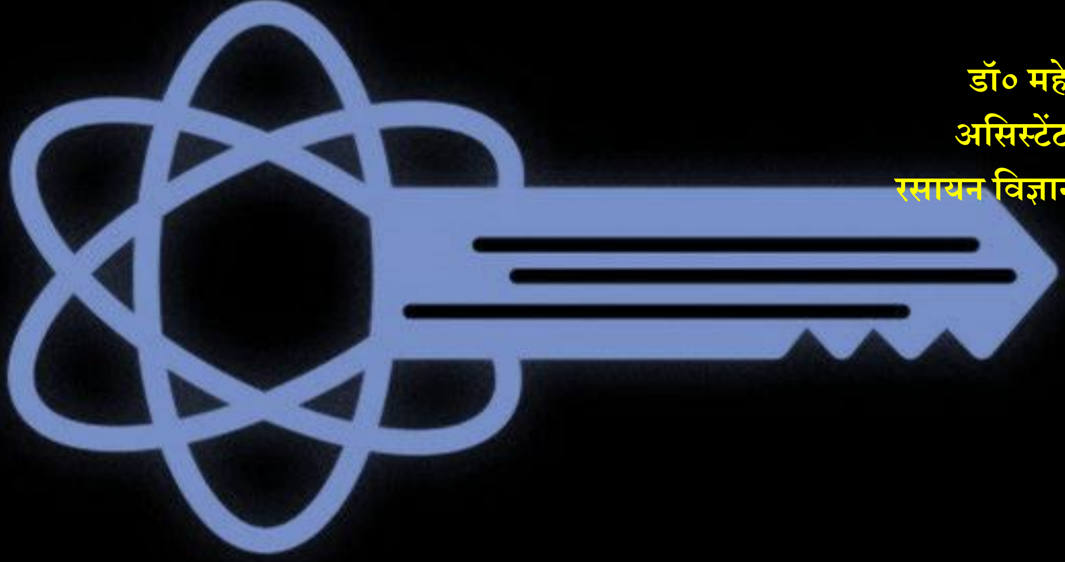

(4 मिनट का पठन)

(19) सांस्कृतिक स्मृति-लोप: उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में

उत्तराखण्ड, जिसे अक्सर "देवभूमि" या "देवताओं की भूमि" कहा जाता है, अपने भव्य हिमालयी भू-दृश्यों, आध्यात्मिक तीर्थस्थलों और जीवंत संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। जहाँ ज्यामितीय ऐपण चित्रकला जैसी लोकप्रिय लोक कलाएँ व्यापक रूप से पहचानी जाती हैं, वहीं यह राज्य अन्य कम-ज्ञात पारंपरिक कला रूपों का भी खजाना है जो इसके गढ़वाली और कुमाऊँनी क्षेत्रों की समृद्ध सांस्कृतिक ताने-बाने को दर्शाते हैं। पवित्र भित्ति चित्रों से लेकर जटिल वस्त्रों और भावोत्तेजक लोक नृत्यों तक, ये कलाएँ स्थानीय समुदायों के दैनिक जीवन, धार्मिक विश्वासों और प्राकृतिक वातावरण से गहराई से जुड़ी हुई हैं। सुदूर पहाड़ी गाँवों में सदियों से प्रचलित और पीढ़ियों से चली आ रही ये परंपराएँ एक गहन कलात्मक अभिव्यक्ति और एक जीवंत विरासत का प्रतिनिधित्व करती हैं जो लोगों की पहचान को आकार देती रहती है।

आध्यात्मिक और अनुष्ठानिक लोक कलाएँ

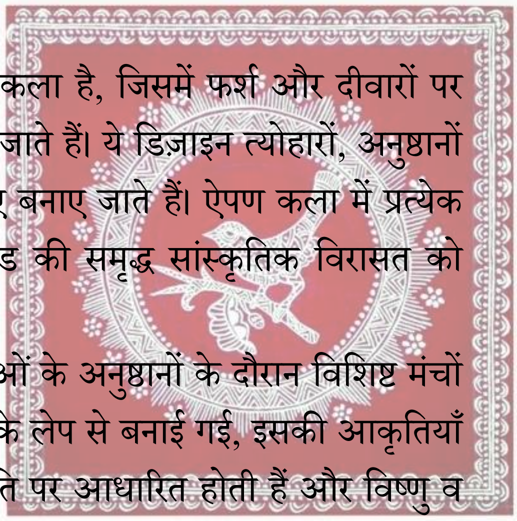

- **ऐपण कला:** ऐपण कुमाऊँ क्षेत्र में प्रचलित एक पारंपरिक कला है, जिसमें फर्श और दीवारों पर प्राकृतिक रंगों और चावल के लेप से जटिल डिज़ाइन बनाए जाते हैं। ये डिज़ाइन त्योहारों, अनुष्ठानों और विशेष अवसरों पर दैवीय आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए बनाए जाते हैं। ऐपण कला में प्रत्येक आकृति और पैटर्न का प्रतीकात्मक महत्व है, जो उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है।
- **पीठ कला:** ऐपण से अलग, यह पारंपरिक चित्रकला देवताओं के अनुष्ठानों के दौरान विशिष्ट मंचों (पीठ) पर बनाई जाती है। लाल गेरू की पृष्ठभूमि पर चावल के लेप से बनाई गई, इसकी आकृतियाँ अक्सर ब्रह्मांडीय व्यवस्था को दर्शाने के लिए पवित्र ज्यामिति पर आधारित होती हैं और विष्णु व शिव जैसे देवताओं को दर्शाती हैं।
- **देकार:** इस अनूठी मिट्टी की कला में उत्तम मिट्टी और प्राकृतिक रंगों के मिश्रण से देवी-देवताओं की त्रि-आयामी आकृतियाँ गढ़ी जाती हैं। देकार आकृतियाँ अत्यंत शुभ मानी जाती हैं और विवाह सहित जीवन के महत्वपूर्ण अवसरों पर बनाई जाती हैं।

वस्त्र और हस्तशिल्प

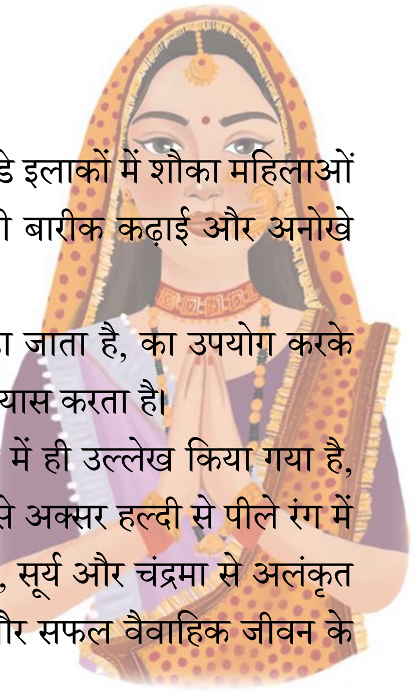

- **थुलमा कढ़ाई:** थुलमा नामक हाथ से बुने हुए कंबल राज्य के ऊँचे, ठंडे इलाकों में शौका महिलाओं द्वारा बनाए जाते हैं। ये गर्म, बारीक कारीगरी वाले ऊनी कंबल अपनी बारीक कढ़ाई और अनोखे डिज़ाइन के लिए जाने जाते हैं।
- **रिंगाल शिल्प:** रिंगाल समुदाय स्थानीय बौने बाँस, जिसे रिंगाल कहा जाता है, का उपयोग करके टोकरियाँ, चटाई और अन्य हस्तनिर्मित उत्पाद बनाने की कला का अभ्यास करता है।
- **पिछौड़ा या रंगवाली पिछौड़ा:** हालाँकि पहले इसे एक वस्त्र के रूप में ही उल्लेख किया गया है, यह कुमाऊँनी महिलाओं की एक धार्मिक कला भी है। यह कपड़ा, जिसे अक्सर हल्दी से पीले रंग में रंगा जाता है, हाथ से चित्रित धार्मिक प्रतीकों जैसे लाल बिंदीदार पैटर्न, सूर्य और चंद्रमा से अलंकृत होता है। इसे विवाह और पूजा जैसे समारोहों में आशीर्वाद, समृद्धि और सफल वैवाहिक जीवन के प्रतीक के रूप में पहना जाता है।

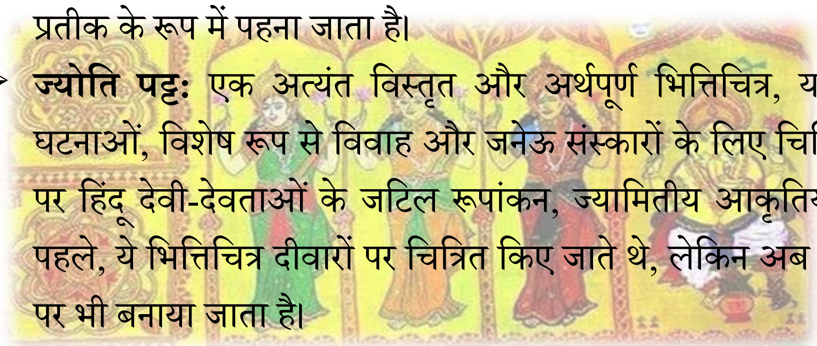

- **ज्योति पट्ट:** एक अत्यंत विस्तृत और अर्थपूर्ण भित्तिचित्र, या पट्टा, जो जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं, विशेष रूप से विवाह और जनेऊ संस्कारों के लिए चित्रित किया जाता है। इसमें आमतौर पर हिंदू देवी-देवताओं के जटिल रूपांकन, ज्यामितीय आकृतियाँ और प्रकृति के चित्रण होते हैं। पहले, ये भित्तिचित्र दीवारों पर चित्रित किए जाते थे, लेकिन अब इन्हें कागज़, हार्डबोर्ड या प्लाईवुड पर भी बनाया जाता है।

- **मण्डलसेरा कढ़ाई:** उत्तराखंड के बागेश्वर जिले के कारीगरों के एक समूह द्वारा की जाने वाली इस विशिष्ट कढ़ाई शैली की विशेषता ज्यामितीय पैटर्न और रंगीन मोतियों और छोटे दर्पणों (टिकरियों) का उपयोग है। इसका उपयोग कपड़ों, शॉलों और थैलों को सजाने के लिए किया जाता है।

प्रदर्शन और संगीत परम्पराएँ

- **छोलिया नृत्य:** कुमाऊँ क्षेत्र में विवाह समारोहों के दौरान किया जाने वाला छोलिया नृत्य एक जीवंत और ऊर्जावान मार्शल नृत्य है। पारंपरिक वेशभूषा में सजे और तलवारों व ढालों से लैस नर्तक ढोल और अन्य पारंपरिक वाद्ययंत्रों की थाप पर नृत्य करते हैं। यह नृत्य वीरता और योद्धा भावना का प्रतीक है, जो विवाह समारोहों में एक अनोखा स्पर्श जोड़ता है।
- **जागर:** लोकगीतों और नृत्यों से युक्त पूर्वजों की पूजा का एक अनुष्ठानिक रूप, जागर स्थानीय देवताओं को जगाने या पूर्वजों की आत्माओं का आह्वान कर उनको शांत करने के लिए किया जाता है। इस रात्रिकालीन समारोह में एक गायक (जगरिया) और एक तालवादक के नेतृत्व में, इस सम्मोहन अनुष्ठान में अक्सर एक कलाकार समाधि जैसी अवस्था में प्रवेश करता है और आत्मा के लिए माध्यम का काम करता है। यह ग्रामीणों के लिए अपने देवताओं से न्याय या मार्गदर्शन प्राप्त करने का एक तरीका है।राज्य की आध्यात्मिक और लोक परंपरा का एक प्रमुख हिस्सा हैं।
- **रम्माण नृत्य:** यह अनुष्ठानिक रंगमंच और नृत्य वर्ष 2009 में यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल है। उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में चमोली जिले के सलूर-डुंगरा गांवों में प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला यह त्यौहार ग्राम देवता भूमियाल देवता के सम्मान में मनाया जाता है, जिसमें धार्मिक आख्यान, स्थानीय पौराणिक कथाएं और रामायण जैसे हिंदू महाकाव्य शामिल हैं। इस उत्सव के दौरान, कलाकार देवताओं, राक्षसों और अन्य आकृतियों को दर्शाने के लिए पवित्र वृक्षों से बने लकड़ी के मुखौटे पहनते हैं।

परम्परिक उत्सव

- **बग्वाल मेला:** देवीधुरा में आयोजित बग्वाल मेला एक प्राचीन परंपरा है जहाँ प्रतिभागी एक अनोखे और गहन अनुष्ठानिक पत्थरबाज़ी उत्सव में भाग लेते हैं। रक्षाबंधन के दिन आयोजित होने वाले इस आयोजन की जड़ें स्थानीय लोककथाओं में हैं और माना जाता है कि इससे देवी वाराही का आशीर्वाद प्राप्त होता है। दो समूहों में विभाजित प्रतिभागी, नियंत्रित वातावरण में एक-दूसरे पर पत्थर फेंकते हैं और अपनी वीरता और भक्ति का प्रदर्शन करते हैं।
- **हरेला उत्सव:** हरेला, मुख्य रूप से कुमाऊँ क्षेत्र में मनाया जाता है और यह मानसून के आगमन और बुवाई के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है। इस कृषि उत्सव में अच्छी फसल के लिए देवताओं की पूजा की जाती है और घरों के अंदर छोटी टोकरियों में बीज बोए जाते हैं। अंकुरित पौधों को बाद में खेतों में स्थानांतरित कर दिया जाता है, जो समृद्धि और जीवन की निरंतरता का प्रतीक है।
- **जौलजीबी और थल मेले:** पिथौरागढ़ जिले में आयोजित होने वाले जौलजीबी और थल मेले महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन हैं जहाँ स्थानीय भोटिया जनजातियाँ एकत्रित होती हैं। ये मेले प्रमुख व्यापारिक केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं जहाँ उच्च हिमालयी क्षेत्रों से वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है। ये मेले केवल वाणिज्य के लिए ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का उत्सव भी हैं, जिनमें पारंपरिक संगीत, नृत्य और भोजन अभिन्न अंग होते हैं।

उत्तराखण्ड की कम प्रसिद्ध लोक कलाएँ इसके पर्वतीय समुदायों की गहन आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करती हैं। ऐपण और अन्य प्रमुख लोक कलाओं ने जहाँ पहचान हासिल की है, वहीं उत्तराखण्ड में कम चर्चित परंपराओं का भी एक गहरा भण्डार है जो यहाँ के ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के जीवन में गहराई से समाई हुई हैं।

सन्दर्भ

- https://www.travelogyindia.com/uttarakhand/art-and-craft-of-uttarakhand.
- https://oaklores.com/2024/12/01/the-peeth-art-of-uttarakhand-a-timeless-tradition
- https://ich.unesco.org/en/RL/ramman-religious-festival-and-ritual-theatre-of-the-garhwal-himalayas-india-
- https://shreya.shilangorchard.com/seo-title-uttarakhand-art-and-craft-traditional-handicrafts-aipan-art-cultural-heritage

डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

बग्वाल मेला

मण्डलसेरा कढ़ाई

जागर

जौलजीबी मेला

रिंगाल हस्तशिल्प

कुमाऊँनी और गढ़वाली भाषा शब्दकोश (रिश्ते-नाते)

कुमाऊँनी शब्द	गढ़वाली शब्द	हिन्दी अर्थ
ईजा, मै	बई	माता
बौज्यू, बाब	बुबाजि	पिता
काक	काका	चाचा
काखि	काकी	चाची
जेठबाबू, ठुलबाबू	बौड़ा	ताऊ
जेठज्या	बौड़ी	ताई
च्यल, च्यौल	नौन्याल, लड़ीक	बेटा
चेली	नौनी, बेटि	बेटी
दाद	भैजी, दिदा	बड़ा भाई
भुलि, नान भै	भुला	छोटा भाई
दिदि	दीदि	बड़ी बहिन
बैणी, भुलि	भुलि	छोटी बहिन
बुआ	पुफू	बुआ
कैंज	कांसी ब्वै	मौसी

नोटः कृपया 'कोस-कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वाणी' के प्रभाव को नजरन्दाज करने का कष्ट करें।

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग

हिन्दी मेरी मातृभाषा

जन-जन की वाणी, माँ हिंदी प्यारी,
तुझसे ही पहचाने भारत की दुलारी।
कवियों ने तुझे सँवारा, दिया नया रूप,
तेरी महिमा गाई, हर काल और हर धूप।

कबीर ने दोहे में ज्ञान सरल समझाया,
तुलसी ने रामचरित मानस घर-घर पहुँचाया।
सूर ने कृष्ण की लीला, प्रेम रस घोला,
तेरी बोली में भक्ति का द्वार खोला।

मैथिलीशरण ने देश-प्रेम की अलख जगाई,
जयशंकर ने इतिहास से कथाएँ बनाईं।
महादेवी ने वेदना को शब्द दिए अनमोल,
निराला ने मुक्त छंद से खोले नए बोल।

सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति की सुषमा गाई,
रंग-रूप तेरे, हर भाव में समाई।
दिनकर ने ओज और शौर्य से तुझे भर डाला,
बच्चन ने जीवन की मधुशाला उछाला।

इन सभी महान कवियों का तू ही आधार,
तेरी गोद में खेला, साहित्य का संसार।
सरल सहज भावों की तू ही पहचान,
मातृभाषा हिंदी, तुझ पर हम कुर्बान।

द्वारा रचित: डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

(3 minutes read)

Tiny Giants: The Fascinating World of Nanoparticles

In the world of science, sometimes the most astonishing wonders lie hidden in the smallest things. So, welcome to the nanoscale, where particles are a billionth of a meter in size and yet extraordinary enough to revolutionize the whole new era in different fields like medicine, electronics, energy, and even fashion. These tiny grains are **nanoparticles**, the microscopic marvels, though invisible to the naked eye but stealing the spotlight for their unique properties and endless possibilities.

But wait—what are nanoparticles, and why are scientists so obsessed with them? Let's dive into this fascinating nanoscale universe.

🌐 What Are Nanoparticles?

Nanoparticles are ultra-small particles with dimensions from 1 to 100 nano-meters, so small that you'd need a powerful microscope just to see them. For instance, a human hair is about 80,000 nano-meters wide. At this scale, materials exhibit unique physical and chemical properties like showing unusual colours, improved strength, increased reactivity, or even conducting electricity or heat in unique ways, which they don't show at larger scales or in their bulk form.

Why? Because at nanoscale when matter is this tiny, particles have more surface area relative to their volume, making them incredibly reactive and efficient and arising phenomenon, called quantum effect which is only visible at nanoscale. This makes nanoparticles ideal for a range of applications—from drug delivery to pollution control.

🧪 Types of Nanoparticles

Nanoparticles can be prepared in various shapes, sizes, and compositions. Here are the major types:

- **Metallic Nanoparticles**: Prepared from metals like gold, silver, platinum, or iron, these are known for their optical, electrical, and antimicrobial properties and generally used in medicine and electronics.
- **Carbon-based Nanoparticles**: These include materials like carbon nanotubes, fullerenes and **graphene**. They are incredibly strong and lightweight and thus perfect for employment in electronics, aerospace, energy storage and even sports equipment.
- **Ceramic Nanoparticles**: These are hard, heat-resistant known for their stability and thus find applications in coatings, sensors, sunscreens and drug delivery.
- **Polymeric Nanoparticles**: These are prepared from natural or synthetic polymers and employed for controlled drug release and biodegradable materials.
- **Lipid-based Nanoparticles**: These are most famous for being the core technology behind mRNA COVID-19 vaccines thus efficiently delivering genetic material safely into our cells.

*Each type of nanoparticles opens a different gateway to innovation. But today, let's zoom in on the real stars of the nanoparticle world—**Gold and Silver Nanoparticles.***

🥈 Silver Nanoparticles: The Silent Protectors

Silver has long been known for its germ-fighting abilities. But when reduced to the nanoscale, it becomes even more powerful and versatile.

⚡ **Interesting Insights:**

- **Antibacterials**: Silver nanoparticles are used in wound dressings, medical equipments, clothing, and even refrigerator linings to kill bacteria and viruses.
- **Odor Control**: They are infused into sportswear and socks to prevent bad smells caused by bacterial growth, as they stop the growth of bacteria that cause bad smells.
- **Water Purifiers**: Silver nanoparticles can be used in filters to clean contaminated water in remote areas—life-saving in emergencies.
- **Eco-Warriors**: Some experiments show they can break down pollutants and even help clean oil spills or clean industrial waste without harmful side effects.

But caution is important. While silver nanoparticles are effective, overuse could lead to environmental and biological side effects, a field still under active research.

🚀 The Future Is Nano

Nanoparticles, particularly gold and silver ones, are opening doors we once only dreamed about. From targeted cancer therapies to smart materials that can adapt to their environment, the possibilities seem endless. However, with great power comes great responsibility. Ethical and environmental considerations around nanoparticles are just as important as their scientific applications. As future scientists, engineers, doctors or simply curious minds, it's up to us to shape this nano-powered future wisely.

Dr. Anju Nigam
Assistant Professor
Department of Physics

(15 minutes read)

Digital Literacy: Why It Matters for Everyone

Digital literacy has quietly become one of the most essential sets of skills for people in the 21st century, affecting lives across all age groups, professions, and communities. Most people interact with digital technology daily, whether by sending a message to a colleague, attending online classes, managing bank accounts through mobile applications, or searching for accurate information in a sea of online data. In a rapidly evolving world where technology continues to reshape how knowledge is constructed, shared, and utilized, digital literacy ensures that individuals are not left behind but instead are empowered to navigate this landscape with confidence and critical awareness.

At its simplest, digital literacy is about the informed use of digital technologies for communication, learning, work, and leisure. It expands beyond the ability to use computers and smartphones, encompassing a spectrum of competences: the ability to locate reliable information online, evaluate sources critically, advocate for one's safety and privacy, craft meaningful digital content, and engage ethically and responsibly on digital platforms. This literacy also prepares people to collaborate, innovate, and troubleshoot within digital contexts, whether it's participating in a group video call, designing a digital presentation, or updating software securely on a personal computer.

The significance of digital literacy can hardly be overstated in education. Modern classrooms, from primary schools to universities rely on digital learning environments for lessons, research, collaboration, and assessments. A student well-versed in digital literacy can swiftly access sources, discern credible information from misleading or false content, and use educational platforms with comparative ease, thereby expanding learning opportunities and bolstering confidence. The growing reliance on online assessments and digital classrooms means that unfamiliarity with digital tools can hamper a learner's potential, cause hesitation, or even lead to academic underperformance. The process of critical thinking- of weighing information for accuracy, bias, and validity is a cornerstone of digital literacy, ensuring individuals do not fall prey to misinformation that is widespread across unregulated parts of the internet.

In the professional sphere, employers now expect candidates and employees to demonstrate not just foundational knowledge but also proficiency with digital tools relevant to their roles. This might involve anything from managing tasks via project management applications, collaborating remotely, handling digital data, or responsibly engaging with digital communication channels. Employers value digital literacy because it reflects an ability to learn quickly, operate transparently, and adapt to changes that are inherent in today's digital-first workplaces. Digital platforms evolve constantly, with new tools introduced and old ones updated or redesigned regularly. The capacity to adapt, learn, troubleshoot, and problem-solve using digital means is a defining feature of successful professionals in modern industries.

Beyond personal and professional gains, digital literacy has a broader social impact. It enables greater participation in social life and civic activities. Digital platforms act as bridges, shrinking the limitations of geography and time, allowing people- students, teachers, workers, or community members to connect, collaborate, and build relationships beyond traditional boundaries. Social media sites and messaging apps foster communication between friends and families separated by distance and offer opportunities for new connections and networks. These digital connections are not without risk, however. The same tools that offer connection can facilitate cyberbullying, scams, and misinformation spread, particularly for those lacking digital literacy. Being digitally literate, then, is as much about defense and discernment as it is about access; it equips people to recognize and respond wisely to the dangers that inhabit the online space.

Digital literacy also underpins personal security and privacy in the online world. As more aspects of daily life like shopping, banking, healthcare, education move online, individuals must learn to safeguard their personal information. Digital literacy involves understanding not only the technologies themselves but also the ways in which data can be compromised or misused. Knowing how to create strong passwords, identify phishing schemes, protect sensitive information, and responsibly share or withhold personal details online becomes crucial. Those who lack these competencies are exposed to greater risks of fraud, identity theft, and loss of data privacy, while digitally literate individuals can better control their digital identity and remain one step ahead of evolving threats.

One of the most compelling arguments for digital literacy is its role in promoting digital equity and bridging societal gaps. The “digital divide”, the gap between those with access to digital resources and skills and those without can reinforce existing social and economic inequalities. For marginalized groups, the elderly, people in rural or under-resourced communities, and those historically sidelined from technological advancements, digital literacy is a form of empowerment. Comprehensive digital education offers a stepping stone to employment, higher education, health resources, and civic engagement. Bridging this divide ensures equal opportunities for participation in rapidly digitizing societies, fulfilling not only individual ambitions but also contributing to equitable, inclusive development.

Ethical responsibility represents another pillar of digital literacy. The digital world allows for easy sharing and rapid dissemination of ideas, but it also brings issues of ownership, copyright, plagiarism, and responsible communication to the forefront. Adolescents and adults alike must understand the value of originality, respect copyright laws, and communicate without resorting to harassment or misinformation. The ethical dimension also extends to understanding and practicing digital compassion, engaging in discussions online with empathy, avoiding hate speech, and using the internet as a space for constructive dialogue rather than conflict and misinformation.

Critical thinking is inherent in digital literacy, perhaps more so now than ever. The vastness of online information like blogs, opinion pieces, unverified news sites, advertisements, means that individuals are exposed to both credible sources and vast amounts of misleading or outright false content. The ability to critically engage with this information, to ask questions such as “Who created this? Why? Is it supported by evidence?” is vital for sound decision-making, whether the context is academic research, healthcare choices, or civic participation. Misinformation, data manipulation, and online scams thrive where critical literacy is missing; as people become more digitally literate, the possibilities for manipulation and deception diminish.

Communication is transformed by digital literacy. Today, students join online classes, teachers share learning resources via the cloud, professionals participate in webinars, and communities organize social initiatives using social media. Digital literacy ensures these interactions are effective, polite, and accomplished in a way that meets both ethical and practical standards for digital communication. Today’s global workforce and learning environments depend heavily on effective communication: using proper email etiquette, managing group chats, knowing when and how to use video conferencing tools, or presenting ideas clearly in an online forum. Digital literacy supports these exchanges, enabling collaboration across continents and cultures while simultaneously maintaining professionalism and respect.

Lifelong learning is both an outcome and a requirement of digital literacy. As technologies shift, digitally literate individuals display resilience: they find new learning opportunities, adapt to different devices and platforms, and remain open to continuous development. The internet offers a trove of free online courses, tutorials, forums, and learning communities; only those skilled in digital navigation can realize the full benefit of these resources. Moreover, digitally literate learners often model curiosity, independence, and flexibility to those around them, encouraging a culture of ongoing personal and professional growth.

Within institutional and governmental frameworks, the adoption of digital literacy as a critical goal has gained momentum worldwide. The United Nations, through its Sustainable Development Goals for 2030, recognizes digital literacy as a lever for progress in education and sustainable growth. International and national policies encourage the spread of digital skills to adolescents and adults as part of economic planning and poverty alleviation. These interventions underscore not just a shift in educational priorities, but also a recognition that digital literacy is tied to social empowerment, upward mobility, entrepreneurship, and civic engagement.

The process of acquiring digital literacy skills, however, is not always straightforward or accessible. Barriers persist, including lack of technology infrastructure, limited access to training, or socio-economic challenges. Educational institutions, workplaces, and governments play a

key role in alleviating these by providing access, support, and continuous professional development. At the personal level, taking small, proactive steps like attending digital skill workshops, participating in online courses, exploring reliable internet resources, and practicing responsible online behaviour can make a profound difference. Peer learning and intergenerational exchanges, where younger and older generations share their unique strengths, create supportive environments for collective progress.

In Indian colleges and especially in regions like Almora, Uttarakhand, the journey towards digital literacy has relevance beyond individual achievement. It empowers students to participate in a technologically integrated academic and professional world, and allows teaching staff to adopt new pedagogies that engage students effectively. It is reflected in the shift to e-magazines, digital research projects, and the proactive participation of students in online academic events. Building digital literacy is an ongoing, collaborative enterprise, an investment in the future of education, regional development, and social equity.

In summary, digital literacy matters for everyone because it is intertwined with so many key aspects of life today. It promotes educational success, career advancement, personal security, ethical digital behaviour, social participation, and lifelong learning. The confident and discerning use of digital tools helps each person face the world's opportunities and challenges with greater clarity, safety, and purpose. While the digital landscape will continue to change, the skills and sensibility that define digital literacy will remain invaluable for all, ensuring that progress is both meaningful and accessible to everyone.

Dr. Kavinder Bhatt
Assistant Professor
Department of English

(15 minutes read)

The Sweet History of Chocolate

Nothing is better than chocolate. Chocolate remains an important food in our daily life. But have you ever wondered when the first chocolate bar was made? Where was chocolate first discovered? Who is behind this great invention? When most of us hear the word chocolate, it conjures up images of bars, coated candies, cakes, but the chocolate of today is little like the chocolate of the past. Throughout much of its history, chocolate was a revered but bitter beverage, not a sweet edible treat. September 13th is celebrated as the International Chocolate Day. This day marks the completion of 466 years of the arrival of chocolate in the Europe. The day is also special because the founder of the first chocolate company Milton S. Hershey was born on this day. Whether to express happiness or to apologize, chocolate is popular. Let's find out about one of the most popular food types and flavours in the world.

History and Story of Chocolate

Millions of years ago, the ***Theobroma cacao*** tree originated in the upper Amazon basin region. '*Theobroma*' comes from ancient Greek and translates as '***food of the Gods***'. Later, it was to be called the cacao tree or chocolate tree. A cacao tree is a tropical tree. It grows best in hot and humid regions of the world. For this reason, the cacao tree can only be grown near the equator. Cacao trees bloom in an unusual way. Tiny flowers grow in clusters directly from the trunk and large branches. They are pollinated by tiny flies called midges. Then the trees bear large pods similar in shape to a papaya. When cacao pods ripen, they are cut open. Each pod contains an average of 20 to 40 cream-coloured cacao beans.
(Historians don't always know the exact dates of historical events. That's why you'll see a "ca" next to some of the years on these pages. It stands for "circa," meaning "around.")

Ancient Origins in Mesoamerica

- **The First Cultivators:** The history begins with the cacao tree (*Theobroma cacao*), native to the Amazon rainforest. Ancient civilizations in what is now Ecuador first used the cacao plant ca 5,300 years ago. It's here that the first cacao plants were found. However, the first people who tasted the fruits and pioneered turning beans into a drink were representatives of the ancient Olmec civilisation (modern-day Mexico and Central America) ca 1800 B.C. They called the cacao tree by the ridiculous-sounding word '*cacava*'. Cacao beans were dried in the open sun. During the drying process, the beans assumed their brown to dark brown colour. The Olmecs then ground the beans into powder. Then the powder was mixed with hot boiling water, cornmeal, and spices. The result was a thick, bitter, foamy drink. *Historians aren't sure how the Olmec figured out that the plant's bitter beans would make tasty beverages. But one guess is that when they ate the fruit surrounding the seeds, they'd spit the seeds into a fire, which gave off a pleasing smell.*
- **Mayan 'Food of the Gods' (ca 8th century A.D.):** In place of Olmecs came another Mesoamerican group Maya (*Cha-ching*), and the cacao tree became the classic cod tree for this ancient tribe. The Mayans were so fond of chocolate that they not only gathered cacao beans in the forests, but also learned to grow these trees in their gardens. Mayan chocolate was thick and frothy, and often mixed with hot water, vanilla and chilli peppers. The Mayans, who considered cacao a gift from the gods, used chocolate for sacred ceremonies and funeral offerings. They held a yearly festival to honour the cacao god '*Ectuar*'.
- **Aztec Luxury and Currency:** As people of the Aztec Empire spread across Mesoamerica in the 1400s, they too began to prize cacao. They believed that cacao came from the gods on their holy mountain. A feathered serpent god called '*Quetzalcoatl*' was believed to have gifted the divine bean to humans. Since the Aztecs couldn't grow it in the dry highlands of central Mexico, they traded with the Mayans for the beans.

The Aztecs used them as currency to buy food and other goods. A single bean could fetch you an avocado. While four beans could be traded for a pumpkin, and ten beans for a healthy rabbit. It was a time when money literally grew on trees. Aztec chocolate was a revered brew made of roasted and ground cacao seeds mixed with spices. The Aztecs poured this mixture from one pot into another, creating a thick foamy beverage called '*xocolatl*', meaning bitter water. The Aztecs held chocolate in great reverence, using it at marriage ceremonies, and also giving the drink to victorious warriors after battles and using it during religious rituals. It's rumoured that the powerful Aztec ruler Montezuma-II drank 50 cups of chocolate a day for energy and is an aphrodisiac. He kept a storage room full of beans acquired through trade, tax and military conquests.

The Arrival in Europe

Christopher Columbus and his crew may have been the first Europeans to have come across cacao beans, but missed the opportunity to enter the history of chocolate. In 1502, he discovered cacao beans after intercepting a trade ship on a journey to America. Columbus brought the cacao beans he seized back to Europe, but their potential value was initially overlooked by the Spanish king and his court.

- **Spanish Introduction:** In 1519, the notorious conquistador Hernan Cortes travelled to Mesoamerica to establish Spanish colonies. Montezuma, mistaking the invader for the reincarnation of a deity, welcomed him with a banquet, where drinking chocolate was served. When Cortes first tasted it, he was absolutely revoted and claimed that it was swill for pigs.
- **Sweetened for the Elite:** After the Spanish conquest of the Aztecs, Cortes returned to Spain and brought back chests full of cacao beans. Their bitter taste prompted them to be initially used as a medicine and recommended for stomach aches, indigestion, coughs and fever. So European palates made their own varieties of hot chocolate with cane sugar, honey cinnamon and other common spices and flavourings. This made it absolutely delicious. By the 17th century, the chocolate mania spread throughout Europe.

The Industrial Revolution: From Drink to Bar

- **The Cocoa Press:** For almost two centuries, nothing interesting happened in the history of chocolate. Chocolate was enjoyed as a beverage and milk was often added instead of water. Things started changing in 1828 when Dutch chemist Conrad van Houten invented the cocoa press which could separate the cocoa butter from cocoa beans and create separate cocoa powder and cocoa fat.
- **First Eating Bar:** The introduction of cocoa powder made creating chocolate drinks much easier and cocoa fat helped make chocolate affordable to everyone. In 1847, British chocolatier Joseph Fry created the first chocolate bar from cocoa butter, cocoa powder and sugar. He poured this mixture in moulds and voila! The chocolate bar was born. In 1861, Richard Cadbury created the very first heart-shaped box of chocolates for Valentine's Day. The popularity of the boxes has only grown over the years.
- **Milk Chocolate:** In 1875, Swiss chocolatier Daniel Peter utilised powdered milk to produce the first milk chocolate bar by combining chocolate liquor with Henri Nestlé's newly invented powdered milk. From the invention of milk chocolate sprang the industry we're most familiar with today. This is how chocolate evolved from a bitter beverage to the solid treat we eat today.
- **Conching Press:** Just four years later, another Swiss, Rodolphe Lindt, developed the "conching" machine, which kneaded and heated the chocolate to create a silky, "melt-in-your-mouth" texture that we crave today.

Modern Chocolate

By the 20th century, chocolate was a widely consumed treat enjoyed by people of all classes. By the early 20th century, companies like Hershey's and Cadbury were mass-producing chocolate bars, making them affordable and widely accessible to the public. This shift also established the dominance of cocoa production in West Africa, where much of the world's cocoa is still grown today.

How is chocolate made today?

Harvest is gathered twice a year. Beans are placed in large boxes or just in bags. Then are covered with banana leaves and left to ferment. The fermentation process gives flavour to the beans and the pulp slowly liquefies. The beans are then dried in order to reduce moisture content. Then they're packed to be sent to chocolate factories. When dried beans are received at the factory, they're roasted in large rotating ovens which brings out their flavour and aroma. After roasting, the beans are winnowed to remove the shells from around the bean, leaving only the roasted cocoa nib. The nibs are then ground into a paste called chocolate liquor and this can now be used directly in the production of chocolate bars. Incidentally, there are four types of chocolate: *Dark, Milk, White and Ruby*. The latter is made from a special bean known as the ruby cocoa bean. Acquiring a pink hue during the manufacturing process, this chocolate tastes sour-sweet and berry-like.

Easter has been associated with the chocolate tradition for centuries. Chocolate is a great gift that people can give to their loved ones on Valentine's Day. Christmas without chocolates just doesn't seem right. And of course, you'll never want to celebrate your birthday without a chocolate birthday cake. Just about everyone around the globe is a fan of chocolate. It is the most popular sweet treat in the world. No holiday, festival or even party is complete without it. One bar of chocolate is enough to make any child feel the happiest. Well, now you know chocolate has come a long way to reach you.

References

- https://www.magnumicecream.com/us/en/stories/about-us/the-history-of-chocolate/
- https://en.wikipedia.org/wiki/History_of_chocolate.
- https://kids.nationalgeographic.com/history/article/the-secret-history-of-cocolate
- https://campcochocolates.com/origin-and-brief-history-of-chocolate/
- https://www.whitakerschocolates.com/blogs/blog/where-and-when-was-chocolate-invented
- https://www.history.com/articles/history-of-chocolate

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany

समसामयिकी

(अंक सितम्बर)

समसामयिकी

- हाल ही में देश की सबसे तेज ट्रेन कौन बन गई है?- नमो भारत (160 कि०मी०/घण्टा)
- अर्थशास्त्र के लिए पी०वी० नरसिम्हा राव स्मृति पुरस्कार किसे प्रदान किया गया?- डॉ० मनमोहन सिंह
- आई०आई०एम० अहमदाबाद का पहला वैश्विक परिसर कहाँ शुरू किया गया?- दुबई
- भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए किस देश ने 'डिएला' नामक दुनिया का पहला एआई-बॉट मन्त्री नियुक्त किया है?- अल्बानिया
- नेपाल का कार्यकारी प्रधानमन्त्री किसे नियुक्त किया गया है?- सुशीला कार्की
- भारत के 15वें उपराष्ट्रपति कौन बनें हैं, जिन्होंने 12 सितम्बर, 2025 को शपथ गृहण की है?- सी०पी० राधाकृष्णन
- देश की समृद्ध पांडुलिपि धरोहर को डिजिटलीकृत, संरक्षित और आम जनता में उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'संस्कृति मंत्रालय' द्वारा कौन सा पोर्टल लॉन्च किया गया है?- ज्ञान भारतम पोर्टल
- हाल ही में भारत का पहला आर्मी, एयरफोर्स, नेवी का 'समुद्र प्रदक्षिणा' मिशन मुंबई में लॉन्च किया गया, किस प्रकार का अभियान है?- ऑल-वुमेन सर्कमनेविगेशन अभियान
- भारत ने आभूषण व्यापार को मजबूत करने के लिए किस शहर में SAJEX 2025 की शुरुआत की है?- जेद्दा
- **पूर्ण चंद्रग्रहण (ब्लड मून):** 7-8 सितंबर के बीच, जिससे पूर्णिमा का चांद लाल दिखा।
- सितम्बर 2025 में टीम इंडिया का नया मुख्य प्रायोजक किसे घोषित किया गया है?- अपोलो टायर्स
- 2025 में भारत–अमेरिका के व्यापारिक रिश्तों में तनाव का मुख्य कारण क्या था?- रूसी कच्चे तेल के आयात से जुड़ी भारतीय वस्तुओं पर 50% शुल्क
- वेनिस फिल्म महोत्सव में किसने सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार जीतकर इतिहास रच दिया?- अनुपर्णा रॉय

- हाल ही में अप्रत्यक्ष कर प्रणाली को सरल बनाने के उद्देश्य से GST परिषद ने GST की किन दरों को समाप्त कर डिया है?- **12% और 28%**
- तिरुमाला हिल्स और एर्रा मट्टी डिब्बालु किस राज्य में स्थित हैं जिन्हें यूनेस्को की संभावित सूची में शामिल किया गया है?- **आन्ध्र प्रदेश**
- भारत की जैस्मीन लैम्बोरिया ने लिवरपूल में आयोजित विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप 2025 में कौन सा पदक जीता है?- **स्वर्ण पदक**
- किस देश ने कोआला को क्लैमाइडिया से बचाने के लिए दुनिया के पहले टीके को मंजूरी दी है?- **ऑस्ट्रेलिया**
- भारत के 15वें उपराष्ट्रपति सी० पी० राधाकृष्णन का सचिव किसे नियुक्त किया गया है?- **अमित खरे**
- दा विंची रोबोटिक सिस्टम पर प्रशिक्षाण देने वाला भारत का पहला सरकारी मेडिकल कॉलेज कौन बन गया है?- **एम्स, दिल्ली (AIIMS)**
- भारत ने कौन सी पहली स्वदेशी मलेरिया वैक्सीन विकसित करने की घोषणा की है?- **एडफाल्सीवैक्स**
- हाल ही में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने किस उच्च न्यायालय में 24 न्यायाधीशों की नियुक्ति की है? **इलाहाबाद उच्च न्यायालय**
- किस देश में 30 सितंबर से 2 अक्टूबर तक वार्षिक "सार्क विरासत मंच" का आयोजन किया जाएगा? **श्रीलंका**
- हाल ही में आए '*सुपर टाइफून रागासा*' के कारण किस शहर ने अपनी सबसे उच्चतम चेतावनी जारी की? **हांगकांग**
- हाल ही में RBI द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार घटकर कितना हो गया है? **702.57 बिलियन डॉलर**
- जीआई-टैग वाली स्थानीय फसल को बढ़ावा देने के लिए किस राज्य ने सिराराखोंग हथेई मिर्च महोत्सव का आयोजन किया है? **मणिपुर**
- संयुक्त राष्ट्र महिला की कार्यकारी निदेशक किसे नियुक्त किया गया है? **सिमा सामी बहौस**
- भारत ने किस देश को हराकर डेविस कप 2026 क्वालीफायर में स्थान प्राप्त किया है? **स्विट्जरलैंड**

- भारतीय महिला हॉकी टीम ने चीन में आयोजित महिला एशिया कप 2025 में कौन सा पदक जीता है? रजत पदक
- तमिलनाडु के कोलाचेल के पास किस पंखरहित सर्प ईल की नई प्रजाति की खोज हुई? एप्टाईरिकथियस कन्याकुमारी
- ICC ने हाल ही में महिला क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए किस कंपनी से डील की है?- गूगल
- हाल ही में चर्चित INS एंड्रोथ क्या है?- इंडीजीनस एण्टी-सबमरीन शैलो वॉटर क्राफ्ट
- हाल ही में नॉर्वे के प्रधानमन्त्री कौन बने हैं?- जोन्स गाहर स्टोरे
- रूस ने पहली mRNA-आधारित कौन सी कैंसर वेक्सीन विकसित की है?- एंट्रोमिक्स (मानव ट्रायल में बिना किसी दुष्प्रभाव के 100% असर)
- विश्व मुक्केबाज़ी चैंपियनशिप 2025 में 48 किग्रा और 57 किग्रा भार वर्ग में स्वर्ण पदक किसने जीता?- मिनाक्षी हूडा और जैस्मिन लाम्बोरिया
- सितंबर 2025 में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा भारत की पहली बाँस-आधारित बायो-रिफाइनरी का उद्घाटन कहाँ किया गया?- नूमालीगढ़, गोलाघाट ज़िला, असम
- हाल ही में किसे कृषि मीडिया पुरस्कार 2025 प्रदान किया गया है? अम्शी प्रसन्नकुमार
- भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के पहले कवक विज्ञानी निदेशक कौन बने हैं? कणाद दास
- बिना हाथ वाली पहली वर्ल्ड पैरा आर्चरी चैंपियन कौन बनी हैं? शीतल देवी
- दुनिया की पहली बंद ईंधन चक्र परमाणु ऊर्जा प्रणाली कौन सा देश बनाएगा? रूस
- भारत ने किस संस्थान को संयुक्त राष्ट्र एआई उत्कृष्टता केंद्र के रूप में नामित किया है? आईआईटी-मद्रास
- भारत का पहला केंद्रीय ऊतक बैंक किस शहर में शुरू किया गया है? दिल्ली

सितम्बर माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रमुख प्रेरणादायी हस्तियाँ

सितम्बर माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रेरणादायी हस्तियाँ

उत्तराखंड के हरे-भरे, शांत परिदृश्यों से, जहाँ पहाड़ दृढ़ता की कहानियाँ सुनाते हैं, सितंबर में जन्मे दिग्गजों का एक अद्भुत समूह प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचा। दशकों से चली आ रही उनकी कहानियाँ उनकी मातृभूमि की भावना को प्रतिध्वनित करती हैं– दृढ़ संकल्प, जुनून और अपने काम के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की भावना।

1. एक राजनेता जिसने एक राज्य को दिया आकार:

19वीं सदी के उत्तरार्ध में, युवा **गोविंद बल्लभ पंत** (जन्म 10 सितंबर, 1887) अल्मोड़ा में एक नवजागृत राष्ट्र के सपनों को लेकर वयस्क हुए। एक कुशल वकील के रूप में, उन्होंने वकालत के शांत जीवन को राजनीतिक रैलियों की गर्जना के लिए त्याग दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, उनकी तीक्ष्ण बुद्धि और विशाल व्यक्तित्व ने उन्हें ब्रिटिश पुलिस का आसान निशाना बना दिया, और अपने साहस के लिए उन्होंने गंभीर चोटें भी सहीं। लेकिन पहाड़ों का हौसला आसानी से नहीं टूटता। स्वतंत्रता के बाद, वे उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री बने, जहाँ उन्होंने भूमि सुधारों का समर्थन किया और गरीबों के लिए संघर्ष किया। उनकी विरासत—एक बेहतर भविष्य में उनके अटूट विश्वास का प्रमाण—आज भी आधुनिक भारत की रूपरेखा को आकार देती है।

2. जनता की आवाज़:

गिरीश तिवारी 'गिर्दा' (जन्म 10 सितंबर, 1945) अल्मोड़ा के एक कवि, गायक और कार्यकर्ता थे, जिन्होंने अपनी कला का उपयोग सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों के लिए किया। उन्होंने पारंपरिक रूप से निचली जातियों के लिए आरक्षित हुड़का, सार्वजनिक रूप से बजाकर कुमाऊँनी समाज में जाति व्यवस्था को निडरता से चुनौती दी। उनके गीतों ने चिपको आंदोलन और अलग उत्तराखंड राज्य के लिए आंदोलन जैसे आंदोलनों के लिए लोगों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गिर्दा का जीवन उनके इस विश्वास का प्रमाण था कि कला सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम हो सकती है।

3. भारत के लिए निशाना साधने वाला शार्पशूटर:

पहाड़ों के शांत अनुशासन ने **अभिनव बिंद्रा** (जन्म 28 सितंबर, 1982) के एकाग्र मन को आकार दिया। देहरादून में जन्मे, उन्होंने अपना जीवन निशानेबाज़ी के खेल को समर्पित कर दिया, एक एकाकी गतिविधि जिसके लिए अटूट एकाग्रता और सटीकता की आवश्यकता थी। 2008 के बीजिंग ओलंपिक में, वर्षों के अथक प्रशिक्षण के बाद, उन्होंने निशाना साधा और निशाना साधा, और भारत के लिए पहला व्यक्तिगत ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता। हिमालय की तलहटी में पोषित एक शांत दृढ़ संकल्प से उपजी उनकी जीत ने भारतीय एथलीटों की एक पीढ़ी में एक नई ऊर्जा जगा दी।

4. शहीद हुए पुलिसकर्मी:

दशकों बाद, कुमाऊँनी कस्बे चौखुटिया मासी में, उत्तराखण्ड के एक और सपूत का जन्म हुआ: **मोहन चंद शर्मा** (जन्म 23 सितंबर, 1965)। 19 वर्षों तक, उन्होंने दिल्ली पुलिस में अदम्य समर्पण के साथ सेवा की, आतंकवाद के सामने उनके साहस की परीक्षा हुई। 2008 के बटला हाउस एनकाउंटर के दौरान उनकी बहादुरी अपने चरम पर पहुँच गई, जहाँ उन्होंने बिना घबराए खतरे का सामना किया। हालाँकि वे इस मुठभेड़ में जीवित नहीं बच पाए, लेकिन उनकी वीरता के लिए उन्हें भारत के सर्वोच्च शांतिकालीन वीरता पुरस्कार, अशोक चक्र से सम्मानित किया गया। उनका बलिदान इस बात की एक सशक्त याद दिलाता है कि वीर अक्सर हमारे बीच विचरण करते हैं, उनकी मौन शक्ति राष्ट्र की सुरक्षा को बनाए रखती है।

5. गीतों के पीछे की प्रतिभा:

उत्तराखंड में जन्मे **प्रसून जोशी** (जन्म 16 सितंबर, 1971) ने अपने छोटे शहर में पले-बढ़े होने के कारण एक अनूठी रचनात्मक दृष्टि विकसित की। 17 साल की उम्र में अपनी पहली किताब प्रकाशित करने के बाद, उन्होंने विज्ञापन की दुनिया में कदम रखने से पहले एमबीए की पढ़ाई की। वे एक प्रसिद्ध गीतकार और पटकथा लेखक बने और फना, तारे ज़मीन पर और भाग मिल्खा भाग जैसी फिल्मों में अपने काम के लिए कई पुरस्कार जीते। उनकी प्रेरणादायक यात्रा इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे विविध अनुभव एक शक्तिशाली और प्रासंगिक रचनात्मक आवाज़ को आकार दे सकते हैं।

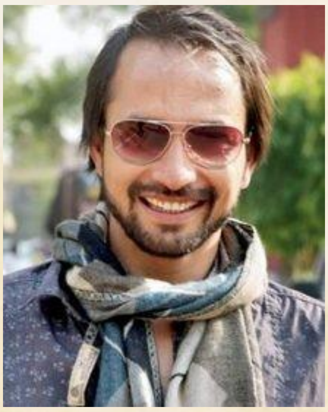

6. पहाड़ों को पर्दे पर लाने वाले अभिनेता:

पौड़ी गढ़वाल में जन्मे अभिनेता **दीपक डोबरियाल** (जन्म 01 सितम्बर, 1975) की सफलता का मार्ग दृढ़ता से प्रशस्त हुआ। दिल्ली आकर रंगमंच से गहराई से जुड़ने के बाद, वे फिल्मों में अभिनय करने के लिए मुंबई चले गए। उन्होंने वर्षों तक संघर्ष किया, अक्सर छोटी-मोटी भूमिकाओं में टाइपकास्ट होने और "बहुत दुबले" होने के कारण शरीर को लेकर शर्मिंदगी झेलनी पड़ी। विशाल भारद्वाज की फिल्म "ओमकारा" में उनकी असाधारण प्रतिभा निखर कर सामने आई, जिसने उन्हें व्यापक प्रशंसा दिलाई और उनके आलोचकों को चुप करा दिया। आज, उन्हें उनकी बहुमुखी प्रतिभा के लिए जाना जाता है और वे दृढ़ता की शक्ति के प्रमाण हैं।

7. डिजिटल युग की कहानीकार:

नैनीताल में जन्मी **डॉली सिंह** (जन्म 23 सितंबर, 1993) एक लोकप्रिय अभिनेत्री, लेखिका और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर हैं। ऑनलाइन कंटेंट निर्माण से शुरू हुआ उनका करियर मॉडर्न लव मुंबई और थैंक यू फॉर कमिंग जैसी फिल्मों में भूमिकाओं तक विस्तारित हुआ है। हाल ही में, उन्होंने 76वें कान्स अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में रेड कार्पेट पर भी अपनी शुरुआत की।

8. उत्तराखण्ड के मुख्यमन्त्री:

पुष्कर सिंह धामी (जन्म 16 सितम्बर, 1975) ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत भारतीय जनता युवा मोर्चा से की और तेज़ी से तरक्की की। 2021 में, वह 45 साल की उम्र में उत्तराखंड के सबसे युवा मुख्यमंत्री बने। उनकी राजनीतिक सूझबूझ की परीक्षा तब हुई जब 2022 के चुनावों में वह अपनी ही सीट हार गए, लेकिन अपनी पार्टी द्वारा उन्हें फिर से चुनकर अपना कार्यकाल जारी रखने के लिए चुना गया। अब वह राज्य के इतिहास में लगातार दूसरी बार मुख्यमंत्री बनने वाले पहले व्यक्ति हैं। धामी का करियर राजनीतिक लचीलेपन और दृढ़ संकल्प की कहानी बयां करता है।

9. प्रतिभा की कोई समयसीमा नहीं होती:

देहरादून की रहने वाली करुणा पाण्डेय (जन्म 05 सितम्बर, 1980) का सफ़र अटूट महत्वाकांक्षा और अपनी प्रतिभा में विश्वास का प्रमाण है। उन्होंने टेलीविज़न से अपने करियर की शुरुआत की और बहुमुखी अभिनय के लिए ख्याति अर्जित की, लेकिन एक निर्णायक, मुख्य भूमिका का उनका सपना अभी भी दूर था। इंडस्ट्री अक्सर इंतज़ार करने वालों के प्रति निर्दयी होती है, लेकिन करुणा का धैर्य एक शांत आत्मविश्वास में निहित था। फ़िल्मी भूमिकाएँ निभाते हुए और टेलीविज़न पर अपना काम जारी रखते हुए, उन्होंने एक ऐसे किरदार का इंतज़ार किया जो उनसे सचमुच बात करता हो। उनके धैर्य को आखिरकार तब फल मिला जब उन्हें टेलीविज़न सीरीज़ 'पुष्पा इम्पॉसिबल' में एक उत्साही नायिका के रूप में चुना गया। इस भूमिका ने उन्हें व्यापक प्रशंसा दिलाई और यह साबित किया कि करियर को परिभाषित करने वाला क्षण किसी भी स्तर पर आ सकता है। उनकी कहानी सिर्फ़ एक ऐसी महिला की नहीं है जिसने पर्दे पर बड़ी सफलता हासिल की, बल्कि सही भूमिका का इंतज़ार करने और वास्तव में चमकने के लिए ज़रूरी लचीलेपन की भी है।

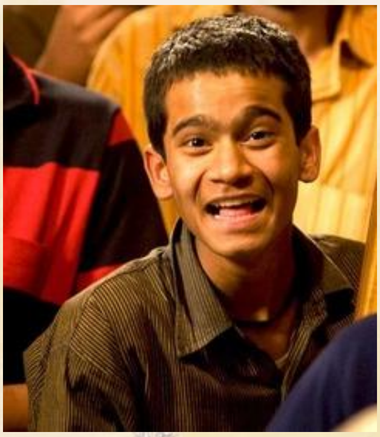

10. '3 इडियट्स' का मिलीमीटर:

नैनीताल में जन्मे राहुल कुमार (जन्म 09 सितम्बर, 1995) के लिए, अभिनय सिर्फ़ एक पेशा नहीं, बल्कि एक गहरा जुनून था। हालाँकि वे रंगमंच से जुड़े रहे और बॉलीवुड में छोटी-मोटी भूमिकाएँ भी कीं, लेकिन ब्लॉकबस्टर फ़िल्म 3 इडियट्स में "मिलीमीटर" की भूमिका ने उन्हें पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। हालाँकि, असली प्रसिद्धि एक बिल्कुल अलग माध्यम से मिली। वेब सीरीज़ "बंदिश बैंडिट्स" में, कबीर की भूमिका में राहुल ने दर्शकों की एक नई पीढ़ी को जोड़ा और एक अभिनेता के रूप में उनकी विविधता को प्रदर्शित किया। उनका सफ़र साबित करता है कि कभी-कभी, सबसे प्रेरणादायक सफलता की कहानियाँ बड़े पर्दे की निरंतर चकाचौंध में नहीं, बल्कि शांत, रचनात्मक जगहों पर मिलती हैं जहाँ प्रतिभा को पनपने और नए दर्शकों को आकर्षित करने का मौका मिलता है।

11. अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेटर:

नैनीताल निवासी **मनीष कृष्णानन्द पाण्डे** (जन्म 10 सितम्बर, 1989) इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में शतक बनाने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी थे। वह 2008 के अंडर-19 विश्व कप में विजयी भारतीय टीम के सदस्य भी रहे।

12. मसूरी की पहाड़ियों से प्रशासन के केंद्र तक:

भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारी **दीपक रावत** (जन्म 24 सितम्बर, 1977) उत्तराखंड कैडर के एक नौकरशाह हैं। अपने प्रभावशाली कार्यों के लिए जाने जाने वाले, उन्होंने कई लोगों को सिविल सेवाओं में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया है। उनकी प्रसिद्धि केवल धूल भरी सरकारी फाइलों तक ही सीमित नहीं रही; वे एक डिजिटल युग के प्रशासक बन गए, जिन्होंने नागरिकों से जुड़ने के लिए एक लोकप्रिय यूट्यूब चैनल का उपयोग किया, जिससे सार्वजनिक सेवा में पारदर्शिता और सुगमता का एक नया स्तर आया।

13. टेलीविजन अभिनेत्री:

देहरादून की एक भारतीय फिल्म और टेलीविजन अभिनेत्री **रागिनी नंदवानी** (जन्म 04 सितम्बर, 1989) को टीवी धारावाहिक "मिसेज कौशिक की पांच बहुएं" में उनकी भूमिका से पहचान मिली। बाद में उन्होंने फिल्मों की ओर रुख किया और तमिल फिल्म "थलाइवा" सहित हिंदी और क्षेत्रीय दोनों सिनेमा में अभिनय किया।

14. युवा पॉडकास्टर:

देहरादून में जन्मे **शुभ्रतो मित्रा** (जन्म 8 सितंबर, 2006) एक भारतीय पॉडकास्टर, युवा आइकन और मीडिया उद्यमी हैं। वे द गोल्डन मेट्रो शो के निर्माता और होस्ट के रूप में जाने जाते हैं, जो एक द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी) पॉडकास्ट श्रृंखला है जिसमें अध्यात्म, संस्कृति, मनोरंजन, नेतृत्व और उद्यमिता के क्षेत्र में अग्रणी हस्तियों के साथ गहन बातचीत शामिल है। उन्हें उत्तराखंड के सबसे युवा पॉडकास्टर और भारत के डिजिटल सामग्री जगत में सबसे आशाजनक उभरते हुए व्यक्तियों में से एक के रूप में व्यापक रूप से सराहा जाता है। उनके मेहमानों में आध्यात्मिक गुरु, बॉलीवुड के रचनाकार, लेखक, राजनीतिक नेता और परिवर्तनकारी शामिल हैं।

सितम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस

September 2025

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

सितम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
1	1 सितम्बर	राष्ट्रीय पोषण सप्ताह	राष्ट्रीय पोषण सप्ताह 1 सितंबर से 7 सितंबर तक मनाया जाता है ताकि लोगों को पोषण के महत्व और बेहतर स्वास्थ्य के लिए मानव शरीर में इसके महत्व के बारे में जानकारी प्रदान की जा सके।
2	2 सितम्बर	विश्व नारियल दिवस	गरीबी कम करने में इस फसल के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए हर साल 2 सितंबर को विश्व नारियल दिवस मनाया जाता है। यह दिन एशियाई प्रशांत नारियल समुदाय (एपीसीसी) के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में भी मनाया जाता है।
3	3 सितम्बर	गगनचुंबी इमारत दिवस	गगनचुंबी इमारत दिवस 3 सितंबर को मनाया जाता है। गगनचुंबी इमारतें बहुत ऊँची इमारतें होती हैं जो किसी शहर के क्षितिज को परिभाषित करती हैं। यह दिन किसी व्यक्ति की औद्योगिक उत्कृष्ट कृति बनाने की क्षमता का प्रतीक है।
4	4 सितम्बर	ईद मिलाद-उन-नबी	ईद मिलादुन्नबी एक महत्वपूर्ण इस्लामी त्योहार है। इसे मौलिद अल-नबी के नाम से भी जाना जाता है। यह दिन पैगंबर मुहम्मद के जन्म का स्मरणोत्सव है। इस्लामी चंद्र कैलेंडर के अनुसार रबी अल-अव्वल के 12वें दिन ईद मिलादुन्नबी पैगंबर की शिक्षाओं की याद दिलाता है। यह लोगों को प्रार्थना करने और दान-पुण्य करने के लिए प्रेरित करता है।
5	5 सितम्बर	अंतर्राष्ट्रीय दान दिवस	सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी रूपों और आयामों में गरीबी को समाप्त करने के लिए हर साल 5 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय दान दिवस मनाया जाता है।
		शिक्षक दिवस (भारत)	भारत में शिक्षक दिवस हर साल 5 सितंबर को भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इस दिन हम ज़िम्मेदार व्यक्ति बनाने में शिक्षकों के प्रयासों की सराहना और आभार व्यक्त करते हैं।
		ओणम	भारत ओणम मनाता है, जो पौराणिक राजा महाबली की वापसी का एक रंगीन और आनंदमय उत्सव है। इस दस दिवसीय उत्सव के दौरान भव्य दावतें, पारंपरिक नौका दौड़ और जीवंत फूलों के कालीन बिछाए जाते हैं। इस वर्ष ओणम 5 सितंबर को मनाया जाएगा।

सूची जारी रखें...

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
6	6 सितम्बर	अनंत चतुर्दशी	अनंत चतुर्दशी एक प्रसिद्ध हिंदू त्योहार है। यह वार्षिक उत्सव दस दिनों तक चलने वाले गणेश चतुर्थी उत्सव के समापन का प्रतीक है। यह जीवन के प्राकृतिक चक्र का प्रतीक है, जहाँ अंत नई शुरुआत की ओर ले जाता है। इस दिन लोग ईश्वर के प्रति अटूट आस्था और प्रतिबद्धता के प्रतीक के रूप में 'अनंत धारा' नामक पवित्र धागा बाँधते हैं।
7	7 सितम्बर	ब्राज़ील का स्वतंत्रता दिवस	ब्राज़ील का स्वतंत्रता दिवस हर साल 7 सितंबर को राष्ट्र के जन्म के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। 7 सितंबर 1822 को ब्राज़ील को पुर्तगालियों से स्वतंत्रता मिली थी। 1889 में ब्राज़ील ने राजशाही व्यवस्था को समाप्त कर दिया और एक गणतंत्र बन गया, लेकिन 7 सितंबर को अपना स्वतंत्रता दिवस घोषित किया।
8	8 सितम्बर	अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस	अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस हर साल 8 सितंबर को लोगों को साक्षरता के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए मनाया जाता है, जो निस्संदेह सम्मान और मानवाधिकारों का विषय है। आपको बता दें कि यह संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का एक प्रमुख घटक है।
9	9 सितम्बर	विश्व भौतिक चिकित्सा दिवस	विश्व भौतिक चिकित्सा दिवस हर साल 8 सितंबर को मनाया जाता है ताकि दुनिया भर के भौतिक चिकित्सकों को लोगों की भलाई और स्वास्थ्य में सुधार लाने में इस पेशे के महत्वपूर्ण योगदान के बारे में जागरूकता बढ़ाने का अवसर मिल सके।
10	10 सितम्बर	विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस (WSPD)	आत्महत्या के मामलों को रोकने के लिए जागरूकता बढ़ाने हेतु हर साल 10 सितंबर को विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस (WSPD) मनाया जाता है। इस दिवस का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय आत्महत्या रोकथाम संघ (IASP) द्वारा किया जाता है। और यह दिवस विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा सह-प्रायोजित है।
11	11 सितम्बर	9/11 स्मरण दिवस	इस वर्ष राष्ट्रीय सेवा एवं स्मरण दिवस या 9/11 दिवस की 20वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है। यह दिन 11 सितंबर, 2001 को मारे गए और घायल हुए लोगों को श्रद्धांजलि देने के लिए दूसरों की मदद करने का अवसर प्रदान करता है।

सूची जारी रखें...

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
11	11 सितम्बर	राष्ट्रीय वन शहीद दिवस	11 सितंबर की तारीख का ऐतिहासिक महत्व है और इसी वजह से इस तारीख को राष्ट्रीय वन शहीद दिवस के रूप में चुना गया। 1730 में, इसी दिन अमृता देवी के नेतृत्व में बिश्नोई जनजाति के 360 से ज़्यादा लोगों ने पेड़ों की कटाई का विरोध किया था। पेड़ों को बचाने के उनके विरोध के कारण, राजस्थान के खेजरली में राजा के आदेश पर उनकी हत्या कर दी गई थी।
		विश्व प्राथमिक चिकित्सा दिवस	यह दिवस सितंबर के दूसरे शनिवार को मनाया जाता है और इस वर्ष यह 11 सितंबर को पड़ रहा है। यह दिन लोगों में इस बारे में जागरूकता बढ़ाता है कि संकट की स्थिति में प्राथमिक उपचार कैसे जान बचा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय महासंघ के अनुसार, प्राथमिक उपचार सभी लोगों के लिए सुलभ होना चाहिए और विकासशील समाजों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए।
		दिग्विजय दिवस	दिग्विजय दिवस प्रतिवर्ष 11 सितंबर को शिकागो में स्वामी विवेकानंद के ऐतिहासिक भाषण के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। 1893 में, उन्होंने भारत और हिंदू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में विश्व धर्म संसद में भाग लिया था। प्रथम विश्व धर्म संसद 11 सितंबर से 27 सितंबर 1893 तक आयोजित हुई थी।
12	12 सितम्बर	राष्ट्रीय प्रोत्साहन दिवस	संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्रीय प्रोत्साहन दिवस की घोषणा 2007 में की गई थी और यह हर साल 12 सितंबर को मनाया जाता यह लोगों को उनके जीवन में सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए प्रोत्साहित करने और उत्थान करने का दिन है।
13	13 सितम्बर	अंतर्राष्ट्रीय चॉकलेट दिवस	अंतर्राष्ट्रीय चॉकलेट दिवस प्रतिवर्ष 13 सितंबर को मनाया जाता है। इस दिवस की स्थापना अमेरिकी राष्ट्रीय कन्फेक्शनर्स एसोसिएशन द्वारा की गई थी। यह मिल्टन एस. हर्षे के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। वे एक अमेरिकी चॉकलेट निर्माता, व्यवसायी और परोपकारी व्यक्ति थे।
14	14 सितम्बर	हिंदी दिवस	हिंदी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन भारत की संविधान सभा ने 1949 में देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया था।

सूची जारी रखें...

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
15	15 सितम्बर	इंजीनियर दिवस (भारत)	भारतीय इंजीनियर भारत रत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को श्रद्धांजलि देने के लिए हर साल 15 सितंबर को भारत में इंजीनियर दिवस मनाया जाता है।
16	16 सितम्बर	अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस	अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस 15 सितंबर को लोगों को यह याद दिलाने के लिए मनाया जाता है कि लोकतंत्र लोगों के लिए है। यह दिन लोगों को लोकतंत्र के महत्व और मानवाधिकारों के प्रभावी कार्यान्वयन को समझाने का अवसर प्रदान करता है।
		मलेशिया दिवस	मलेशिया दिवस 16 सितंबर को मनाया जाता है और इसे 'हरि मलेशिया' के नाम से भी जाना जाता है। 16 सितंबर 1963 को, पूर्व ब्रिटिश उपनिवेश सिंगापुर और पूर्वी मलेशिया के सबा और सारावाक राज्य मलाया संघ में शामिल होकर मलेशियाई संघ का निर्माण किया।
		विश्व ओजोन दिवस	विश्व ओज़ोन दिवस प्रतिवर्ष 16 सितंबर को मनाया जाता है। इसी दिन 1987 में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए गए थे। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा स्थापित, 1994 से विश्व ओज़ोन दिवस मनाया जा रहा है। यह दिन लोगों को ओज़ोन परत के क्षरण के बारे में याद दिलाता है और इसे संरक्षित करने के उपाय खोजने के लिए प्रेरित करता है।
17	17 सितम्बर	विश्वकर्मा पूजा	विश्वकर्मा जयंती, हिंदू देवता और दिव्य वास्तुकार, विश्वकर्मा के उत्सव का दिन है। यह त्यौहार मुख्यतः कारखानों और औद्योगिक क्षेत्रों में, अक्सर दुकानों में मनाया जाता है। श्रद्धा के प्रतीक के रूप में, यह पूजा दिवस न केवल इंजीनियरिंग और वास्तुकला समुदाय द्वारा, बल्कि कारीगरों, शिल्पकारों, मैकेनिकों, लोहारों, वेल्डरों, औद्योगिक श्रमिकों, कारखाना श्रमिकों और अन्य लोगों द्वारा भी मनाया जाता है। वे बेहतर भविष्य, सुरक्षित कार्य परिस्थितियों और सबसे बढ़कर, अपने-अपने क्षेत्रों में सफलता के लिए प्रार्थना करते हैं। श्रमिक विभिन्न मशीनों के सुचारू संचालन के लिए भी प्रार्थना करते हैं।
		विश्व रोगी सुरक्षा दिवस	यह दिवस 17 सितंबर को मनाया जाता है। इसकी स्थापना मई 2019 में 72वीं विश्व स्वास्थ्य सभा द्वारा 'रोगी सुरक्षा पर वैश्विक कार्रवाई' पर WHA72.6 प्रस्ताव को अपनाने के बाद की गई थी।

सूची जारी रखें...

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
17	17 सितम्बर	प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन	प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 17 सितंबर, 2023 को अपना 73वाँ जन्मदिन मना रहे हैं। वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता और भारत के 15वें प्रधानमंत्री हैं। उनका जन्म 17 सितंबर, 1950 को गुजरात के वडनगर में हुआ था।
18	18 सितम्बर	विश्व बांस दिवस	यह दिवस विश्व स्तर पर बांस के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 18 सितंबर को मनाया जाता है।
19	19 सितम्बर	अंतर्राष्ट्रीय समुद्री डाकू की तरह बात करने का दिन	अंतर्राष्ट्रीय समुद्री डाकू की तरह बात करो दिवस हर साल 19 सितंबर को मनाया जाता है। यह दिन लोगों को बीते ज़माने के समुद्री लुटेरों की तरह बात करने और कपड़े पहनने के लिए प्रोत्साहित करता है।
20	20 सितम्बर	अंतर्राष्ट्रीय लाल पांडा दिवस	यह दिवस सितंबर महीने के तीसरे शनिवार को मनाया जाता है। इस वर्ष यह 20 सितंबर को पड़ रहा है। यह दिन लाल पांडा के संरक्षण की तत्काल आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाता है।
21	21 सितम्बर	अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस (संयुक्त राष्ट्र)	अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस (संयुक्त राष्ट्र) दुनिया भर में 21 सितंबर को मनाया जाता है। पहली बार यह सितंबर 1982 में मनाया गया था और 2001 में, महासभा ने एक प्रस्ताव 55/282 पारित किया, जिसके तहत 21 सितंबर को अहिंसा और युद्धविराम के अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस के रूप में स्थापित किया गया।
		विश्व अल्जाइमर दिवस	विश्व अल्ज़ाइमर दिवस 21 सितंबर को मनाया जाता है ताकि लोगों में मनोभ्रंश के कारण होने वाली चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके। 2012 में, विश्व अल्ज़ाइमर माह की शुरुआत की गई थी।
22	22 सितम्बर	रोज़ डे (कैंसर रोगियों का कल्याण)	रोज़ डे 22 सितंबर को कैंसर रोगियों के कल्याण के लिए मनाया जाता है, या यूँ कहें कि यह दिन कैंसर रोगियों के लिए इस उम्मीद का प्रतीक है कि कैंसर का इलाज संभव है। यह दिन कनाडा की 12 वर्षीय मेलिंडा रोज़ की याद में मनाया जाता है, जिन्हें दुर्लभ प्रकार के रक्त कैंसर का पता चलने पर भी उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी।
		विश्व गैंडा दिवस	यह दिवस हर साल 22 सितंबर को मनाया जाता है। यह दिन जागरूकता बढ़ाने और इस अद्भुत प्रजाति के लिए एक सुरक्षित प्राकृतिक आवास बनाने का लक्ष्य रखता है।

सूची जारी रखें...

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
23	23 सितम्बर	अंतर्राष्ट्रीय सांकेतिक भाषा दिवस	23 सितंबर को, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इस दिन को अंतर्राष्ट्रीय सांकेतिक भाषा दिवस घोषित किया। यह दिन सभी बधिर लोगों और अन्य सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ताओं की भाषाई पहचान और सांस्कृतिक विविधता का समर्थन और संरक्षण करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।
24	24 सितम्बर	मैडम भिकाजी कामा का जन्म दिवस	24 सितंबर 1861 को भारत की स्वतंत्रता सेनानी मैडम भिकाजी कामा का जन्म हुआ था। उन्होंने 1907 में जर्मनी के स्टटगार्ट में अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस में तिरंगा फहराया था।
25	25 सितम्बर	विश्व फार्मासिस्ट दिवस	यह दिवस प्रतिवर्ष 25 सितंबर को मनाया जाता है। 2009 में, इस्तांबुल, तुर्की में अंतर्राष्ट्रीय फार्मास्युटिकल फेडरेशन (FIP) कांग्रेस ने 25 सितंबर को वार्षिक विश्व फार्मासिस्ट दिवस (WPD) के रूप में घोषित किया था।
		अंत्योदय दिवस	वर्ष 2014 में 25 सितम्बर को पंडित दीन दयाल उपाध्याय की 98वीं जयंती के उपलक्ष्य में 'अंत्योदय दिवस' घोषित किया गया।
26	26 सितम्बर	यूरोपीय भाषा दिवस	यूरोपीय भाषा दिवस प्रतिवर्ष 26 सितंबर को मनाया जाता है ताकि भाषा सीखने के महत्व के बारे में जनता में जागरूकता बढ़ाई जा सके और भाषा की विरासत को संरक्षित किया जा सके।
		विश्व गर्भनिरोधक दिवस	विश्व गर्भनिरोधक दिवस प्रतिवर्ष 26 सितंबर को मनाया जाता है। यह उपलब्ध गर्भनिरोधक विधियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और युवाओं को अपने यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाने के लिए एक वैश्विक अभियान है।
		विश्व पर्यावरणीय स्वास्थ्य दिवस	इस दिवस की घोषणा अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण स्वास्थ्य महासंघ द्वारा की गई है।
27	27 सितम्बर	विश्व पर्यटन दिवस	विश्व पर्यटन दिवस प्रतिवर्ष 27 सितंबर को पर्यटन के महत्व को उजागर करने के लिए मनाया जाता है, जो रोजगार सृजन और दुनिया भर में लाखों लोगों के भविष्य निर्माण में मदद करता है।

सितम्बर माह
के प्रेरणादायी
व्यक्तित्व
भारत INDIA
1887-1961
0.15
गोविन्द वल्लभ पन्त
GOVIND BALLABH PANT
एक जीवन परिचय

भारतरत्न पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त और 'पहाड़' के लिए उनकी प्रतिबद्धता

भारत की पावन धरती पर जन्म लेने वाले अनेक महापुरुषों में से एक ऐसा नाम है जो हिमालय की छाया में पला-बढ़ा और जीवनभर हिमालयी क्षेत्र के उत्थान के लिए कार्य करता रहा। यह नाम है भारतरत्न पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त का। हिमालय की शान्त वादियों में जन्मे इस महान व्यक्तित्व ने न केवल देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, बल्कि हिमालयी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में भी अमूल्य योगदान दिया। उनका जीवन हिमालय की तरह ही ऊँचा, शुद्ध और प्रेरणादायक था।

प्रारम्भिक जीवन और हिमालयी जड़ें

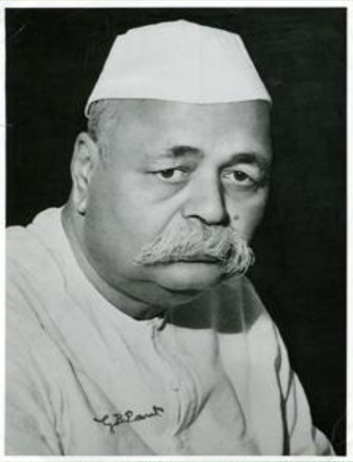

पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त का जन्म 10 सितम्बर 1887 को उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले के 'खूँट गाँव' में हुआ था। हिमालय की गोद में पले-बढ़े पन्त जी को बचपन से ही पहाड़ी जीवन की कठिनाइयों और संभावनाओं का गहरा अनुभव था। उनके पिता मनोरथ पन्त और माता गोविन्दी बाई के घर जन्मे इस बालक का पालन-पोषण उनके नाना बद्री दत्त जोशी ने किया। बचपन में ही पिता के निधन के कारण पन्त जी को जीवन की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परंतु हिमालय की तरह ही उनमें दृढ़ता और संघर्ष की भावना थी। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में प्राप्त की और बाद में इलाहाबाद के म्योर सेन्ट्रल कॉलेज में उच्च शिक्षा ग्रहण की। 1907 में बी.ए. और 1909 में कानून की डिग्री सर्वोच्च अंकों के साथ प्राप्त करने पर उन्हें "लैम्सडेन अवार्ड" से सम्मानित किया गया।

काशीपुर में वकालत और सामाजिक जागरण

1910 में पन्त जी ने अल्मोड़ा आकर वकालत प्रारंभ की, किंतु शीघ्र ही वे काशीपुर चले गए जो उनकी कर्मभूमि बन गई। काशीपुर में उन्होंने न केवल वकालत की, बल्कि सामाजिक जागरण का कार्य भी किया। उन्होंने 1914 ईस्वी में "प्रेम सभा" नामक संस्था का गठन किया जिसका उद्देश्य शिक्षा और साहित्य के प्रति जनता में जागरूकता उत्पन्न करना था। पन्त जी की निष्पक्षता और न्यायप्रियता की एक मशहूर घटना है। एक बार काशीपुर की अदालत में धोती-कुर्ता और गांधी टोपी पहनकर पहुंचे पन्त जी के पहनावे पर अंग्रेज मजिस्ट्रेट ने आपत्ति जताई। इस पर पन्त जी ने दृढ़ता से उत्तर दिया कि वे अपनी भारतीय पोशाक में गर्व महसूस करते हैं। उनकी इस निडरता ने अंग्रेज न्यायाधीश को चकित कर दिया।

कुमाऊं आंदोलन में नेतृत्व एवं कुमाऊं परिषद की स्थापना

हिमालयी क्षेत्र के लिए पन्त जी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान कुमाऊँ आन्दोलन में उनकी भूमिका थी। 1916 में उन्होंने बद्रीदत्त पाण्डे और हरगोविन्द पन्त के साथ मिलकर कुमाऊँ परिषद की स्थापना की। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य हिमालयी क्षेत्र की स्थानीय समस्याओं को हल करना और लोगों को राजनीतिक रूप से जागरूक करना था।

शिक्षा क्षेत्र में योगदान

हिमालयी क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार के लिए पन्त जी ने अनेक प्रयास किए। 1914 में उन्होंने काशीपुर में "उदयराज हिन्दू हाई स्कूल" की स्थापना की। अंग्रेज सरकार के विरोध के बावजूद उन्होंने इस संस्था

को चलाया। उनके शिक्षा कार्यों का प्रभाव इतना व्यापक था कि ब्रिटिश स्कूलों ने काशीपुर से अपना बोरिया-बिस्तर बाँधने में ही भलाई समझी।

राजनीतिक जीवन और उत्तर प्रदेश के विकास में योगदान: मुख्यमन्त्री के रूप में कार्यकाल

स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के बाद, पन्त जी ने राजनीतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमन्त्री बने और तीन अलग-अलग कार्यकालों में इस पद पर रहे-

17 जुलाई 1937 से 2 नवम्बर 1939 तक

1 अप्रैल 1946 से 15 अगस्त 1947 तक

26 जनवरी 1950 से 27 दिसम्बर 1954 तक

हिमालयी क्षेत्र के विकास की योजनाएं

मुख्यमन्त्री के रूप में पन्त जी ने हिमालयी क्षेत्र और तराई के विकास के लिए व्यापक योजनाएं बनाईं। उन्होंने तराई क्षेत्र को आबाद करने की योजना बनाई और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बेरोजगार हुए पूर्व सैनिकों के लिए कॉलोनियां बसाने का प्रावधान किया। उन्होंने रुद्रपुर नगर की स्थापना की और पंतनगर में 16 हजार एकड़ का कृषि फार्म स्थापित किया। कृषि क्रांति के लिए पन्तनगर विश्वविद्यालय की स्थापना और हवाई अड्डा बनवाया, जिससे तराई से देश भर में आधुनिक कृषि की शुरुआत हुई।

जमींदारी प्रथा का उन्मूलन

पन्त जी ने सामाजिक न्याय के लिए जमींदारी प्रथा के उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह कदम हिमालयी क्षेत्र के किसानों के लिए विशेष रूप से लाभकारी था, जहां भूमि के स्वामित्व की समस्या गंभीर थी।

केंद्रीय गृहमंत्री के रूप में सेवा

1955 में पन्त जी भारत के चौथे गृहमन्त्री बने। इस पद पर उनकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिलाना था। 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा में उनके प्रयासों से हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। उन्होंने राज्यों के भाषाई आधार पर पुनर्गठन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

व्यक्तित्व और आदर्श

पन्त जी का व्यक्तित्व हिमालय की तरह ही विराट, ऊँचा और निष्कलंक था। वे सादगी की अद्भुत मूर्ति थे और अभिमान से बहुत दूर रहते थे। मुख्यमन्त्री रहते हुए भी वे अपने मन्त्रियों के चाय-नाश्ते के बिल को सरकारी खर्च में शामिल करने से मना कर देते थे और कहते थे कि यह व्यक्तिगत खर्च है। उनमें बच्चों जैसी सरलता, तपस्वियों की सी गंभीरता, सहिष्णुता और सदा प्रसन्न रहने के गुण विद्यमान थे। वे झूठे मुकदमे नहीं लेते थे और गरीबों के मसीहा थे। जिन गरीबों के पास पैसे नहीं होते थे, वे पण्डित जी की शरण में जाया करते थे।

भारत रत्न सम्मान

पन्त जी के असाधारण योगदान के लिए उन्हें 1957 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री और भारत के गृहमंत्री के रूप में उत्कृष्ट कार्य करने के उपलक्ष्य में दिया गया।

समकालीन प्रासंगिकता और विरासत

आज के युग में जब जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण की चुनौतियां बढ़ रही हैं, पन्त जी का दृष्टिकोण और उनके नाम पर स्थापित संस्थान का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिमालयी पारिस्थितिकी तन्त्र के संरक्षण, सतत विकास, और स्थानीय समुदायों के कल्याण के लिए उनके द्वारा दिखाया गया रास्ता आज भी प्रासंगिक है। एकीकृत पारिस्थितिकी विकास अनुसन्धान कार्यक्रम (IERP) के माध्यम से हिमालयी क्षेत्र की स्थान-विशिष्ट पारिस्थितिकी समस्याओं का समाधान खोजा जा रहा है। यह कार्य पन्त जी के दूरदर्शी चिन्तन का प्रतिफल है।

पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त का जीवन हिमालय की तरह ही ऊंचा, व्यापक और प्रेरणादायक था। उन्होंने हिमालयी क्षेत्र के लिए जो कार्य किए, वे बहुआयामी थे। उन्होंने न केवल ब्रिटिश काल में हिमालयी समुदाय के शोषण के विरुद्ध संघर्ष किया, बल्कि स्वतंत्रता के बाद इस क्षेत्र के समग्र विकास के लिए दूरदर्शी योजनाएं भी बनाईं। उनकी स्वतन्त्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी, शिक्षा के प्रसार में योगदान, तराई क्षेत्र का विकास और उनकी प्रेरणा से पर्यावरण संरक्षण के लिए "गोविन्द बल्लभ पन्त राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान" की स्थापना - ये सभी उनकी हिमालय के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के प्रमाण हैं। उनके नाम पर स्थापित यह राष्ट्रीय संस्थान कोसी-कटारमल में आज भी हिमालयी पारिस्थितिकी के संरक्षण और सतत विकास में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। यह उनकी अमर विरासत का प्रतीक है। आज जब हिमालयी क्षेत्र नई चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब पन्त जी के आदर्श और उनका दृष्टिकोण हमारे लिए नित मार्गदर्शक का काम करता है। पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त का व्यक्तित्व और कृतित्व हिमालय की तरह ही शाश्वत है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व सेवा में है, सच्चा विकास समावेशी होता है, और सच्चा प्रेम अपनी मातृभूमि के कल्याण में निहित है। उनकी स्मृति हमें प्रेरणा देती रहेगी और उनका आदर्श भावी पीढ़ियों का मार्गदर्शन करता रहेगा। हिमालय की गोद में जन्मे इस महान व्यक्तित्व ने सिद्ध कर दिया कि छोटे गाँव से निकलकर भी व्यक्ति राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। उनका जीवन हिमालयी युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है कि वे भी अपने क्षेत्र के विकास में योगदान दे सकते हैं और राष्ट्र निर्माण में भागीदार बन सकते हैं।

भारतरत्न पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त जी को सादर नमन!

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग

पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त जन्म स्थली खूँट गाँव (अल्मोड़ा) में उनके स्मारक और जन्म भवन के अवशेष

फोटो: द्वारा डॉ० जितेन्द्र प्रसाद

चित्र दीर्घा

महाविद्यालय उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ

भविष्य का पोषण और नेतृत्व कार्यक्रम

दिनाँक : 21.07.2025 से 25.07.2025

EXECUTIVE EDUCATION

IIM KASHIPUR

MALAVIYA MISSION TEACHER TRAINING PROGRAMME

IIMKSP/2025-26/MMTTP/NFLP/04/19

Date of Issue: July 25, 2025

IIM KASHIPUR

भारतीय प्रबंध संस्थान काशीपुर

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT KASHIPUR

This certificate is awarded to

Dr. Girja Shankar Yadav

who has successfully completed the

Nurturing Future Leadership Programme (NFLP)

under the aegis of

Malaviya Mission Teacher Training Programme (MMTTP)

conducted by the

Indian Institute of Management Kashipur

from 21st July to 25th July, 2025.

Prof Kunal K Ganguly
Programme Coordinator & Dean Development

Prof Neeraj Dwivedi
Director, IIM Kashipur

महाविद्यालय प्राचार्य प्रो० जी० एस० यादव द्वारा उत्तराखण्ड सरकार द्वारा चयन के परिणामस्वरूप दिनाँक 21.07.2025 से 25.07.2025 तक IIM काशीपुर में "भविष्य का पोषण और नेतृत्व" कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया।

गुरु दक्षता कार्यक्रम

दिनाँक: 01.08.2025 से 30.08.2025

MALAVIYA MISSION TEACHER TRAINING PROGRAMME

Government Of India

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

MALAVIYA MISSION TEACHER TRAINING CENTRE
Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak-484887 (MP)

Prof. M.T.V. NAGARAJU — **Ph: 9440699871**

Progrmme Director — mmttc.amarkantak@igntu.ac.in

The Malaviya Mission Teacher Training Centre (MMTTC), Indira Gandhi National Tribal University (IGNTU), Amarkantak, Anuppur District, Madhya Pradesh is planning to organise the following Online and Residential programme/course for the year 2025 - 26 as mentioned below.

Sl.No.	Programme/Course	Mode	Duration	Who can Apply
1.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	03-12 April, 2025	Faculty/Research Scholars
2.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	23-31 May, 2025	Faculty/Research Scholars
3.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	20-28 June, 2025	Faculty/Research Scholars
4.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	11-19 July, 2025	Faculty/Research Scholars
5.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	21-30 Aug, 2025	Faculty/Research Scholars
6.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	22-30 Sep, 2025	Faculty/Research Scholars
7.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	22-30 Oct, 2025	Faculty/Research Scholars
8.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	07-15 Nov, 2025	Faculty/Research Scholars
9.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	19-30 Dec, 2025	Faculty/Research Scholars
10.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	19-27 Jan, 2026	Faculty/Research Scholars
11.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	06-14 Feb, 2026	Faculty/Research Scholars
12.	NEP Orientation and Sensitisation (8 Days)	Online	02-10 March, 2026	Faculty/Research Scholars
13.	Faculty Induction Programme (Guru Dakshata) (24 Days)	Hybrid Mode	01 – 30 Aug 2025	Faculty of All Disciplines
14.	Faculty Induction Programme (Guru Dakshata) (24 Days)	Online	01-30 Dec, 2025	Faculty of All Disciplines
15.	Refresher Course in Management, Tourism, and Commerce for National Building (Interdisciplinary) (12 Days)	Online	19-31 May, 2025	Faculty of All Disciplines
16.	Refresher Course in Advance Science and Technology for a Sustainable Future (Interdisciplinary) (12 Days)	Hybrid Mode	18-31 July, 2025	Faculty of All Disciplines
17.	Refresher Course on Tribes, Indigenous Languages, and Socialisation (Interdisciplinary) (12 Days)	Online	10-22 Nov, 2025	Faculty of All Disciplines
18.	Refresher Course in Artificial Intelligence Tools in Teaching and Learning (Interdisciplinary) (12 Days)	Online	12-24 Jan, 2026	Faculty of All Disciplines
19.	Refresher Course on Policies, Programmes, and Services in Social Development (Interdisciplinary) (12 Days)	Hybrid Mode	23 Feb -07 March, 2026	Faculty of All Disciplines
20.	Short Term Programme on Rules, Regulations, and University Administration (6 Days)	Online	21-26 April, 2025	Faculty of All Disciplines
21.	Short Term Programme on Mental Health, Well Being, and Life Skills (6 Days)	Online	09 - 14 June, 2025	Faculty of All Disciplines
22.	Short Term Programme on Cyber Safety (6 Days)	Online	08-13 Sep, 2025	Faculty of All Disciplines
23.	Short Term Programme on Languages, Performing Arts, and Media (6 Days)	Hybrid Mode	13-18 Oct, 2025	Faculty of All Disciplines
24.	Short Term Programme on Innovations, Infrastructure, and Industry for Accomplishing Viksit Bharat (6 Days)	Hybrid Mode	09-14 Feb, 2026	Faculty of All Disciplines

No Registration FEE for all programmes/Courses

Register for any of the above Progamme/Course, please visit https://mmc.ugc.ac.in/Login/Index

All the Courses/Programmes will be conducted to fulfill the CAS requirements as UGC Prescribes.

डॉ० उदय शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, गणित विभाग द्वारा इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक द्वारा दिनाँक 01.08.2025 से 30.08.2025 तक आयोजित किए गए गुरु दक्षता कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया।

‘हर घर तिरंगा’ कार्यक्रम दिनाँक : 06.08.2025

(A.)

(B.)

(C.)

(D.)

(E.)

(F.)

(G.)

(A.), (D.), (F.) व (G.) महाविद्यालय के प्राध्यापक NSS द्वारा आयोजित ‘हर घर तिरंगा’ कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं के साथ प्रतिभाग करते हुये; (B.) व (C.) रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन; (E.) मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन।

उन्नत पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

दिनाँक: 15.08.2025 से 30.08.2025

डॉ० शैफाली सक्सेना, असिस्टेंट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा उत्तराखण्ड सरकार द्वारा विज्ञान संवर्ग में चयन के परिणामस्वरूप दिनाँक 15.08.2025 से 30.08.2025 तक IISC बेंगलूरु द्वारा आयोजित किए गए उन्नत पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में प्रतिभाग किया गया।

दीक्षारम्भ कार्यक्रम

दिनाँक : 01.09.2025

डॉ० गोरखनाथ (प्र० प्राचार्य) नवप्रवेक्षित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए।

डॉ० अंजू निगम (NSS प्रभारी) दीक्षारम्भ कार्यक्रम का संचालन करते हुए।

शैक्षणिक भ्रमण एवं प्रशिक्षण

दिनाँक : 15.09.2025 से 20.09.2025

डॉ० गोरख नाथ, असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग द्वारा उत्तराखण्ड सरकार द्वारा कला संवर्ग में चयन के परिणामस्वरूप दिनाँक 15.09.2025 से 20.09.2025 तक JNU नई दिल्ली में शैक्षणिक भ्रमण एवं प्रशिक्षण योजना में प्रतिभाग किया गया।

छात्र-संघ चुनाव 2024-25

दिनाँक : 27.09.2025

दिनाँक 27.09.2025 को महाविद्यालय में सफलतापूर्वक निर्विरोध छात्र-संघ पदाधिकारी क्रमशः सौरव मेहता (अध्यक्ष), दीक्षा बावड़ी (सचिव), ललित सिंह (वि०वि० प्रतिनिधि) एवं संतोषी भट्ट (कोषाध्यक्ष) चुने गए। इस शुभ अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्य प्रो० जी०एस० यादव तथा छात्र-संघ प्रभारी डॉ० रेखा ने सभी प्रत्याशियों को शुभकामनाएं प्रेषित की।

कलाकृति
अनुभाग

कलाकृतियाँ...

चित्रण: बबीता
बी०एस-सी० पंचम सेमेस्टर

इस माह का विचार:
चित्रों का अपना एक जीवन होता है जो चित्रकार की आत्मा से निकलता है।

कलाकृतियाँ...

चित्रण: डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

कुछ अनुशंसित पुस्तकें

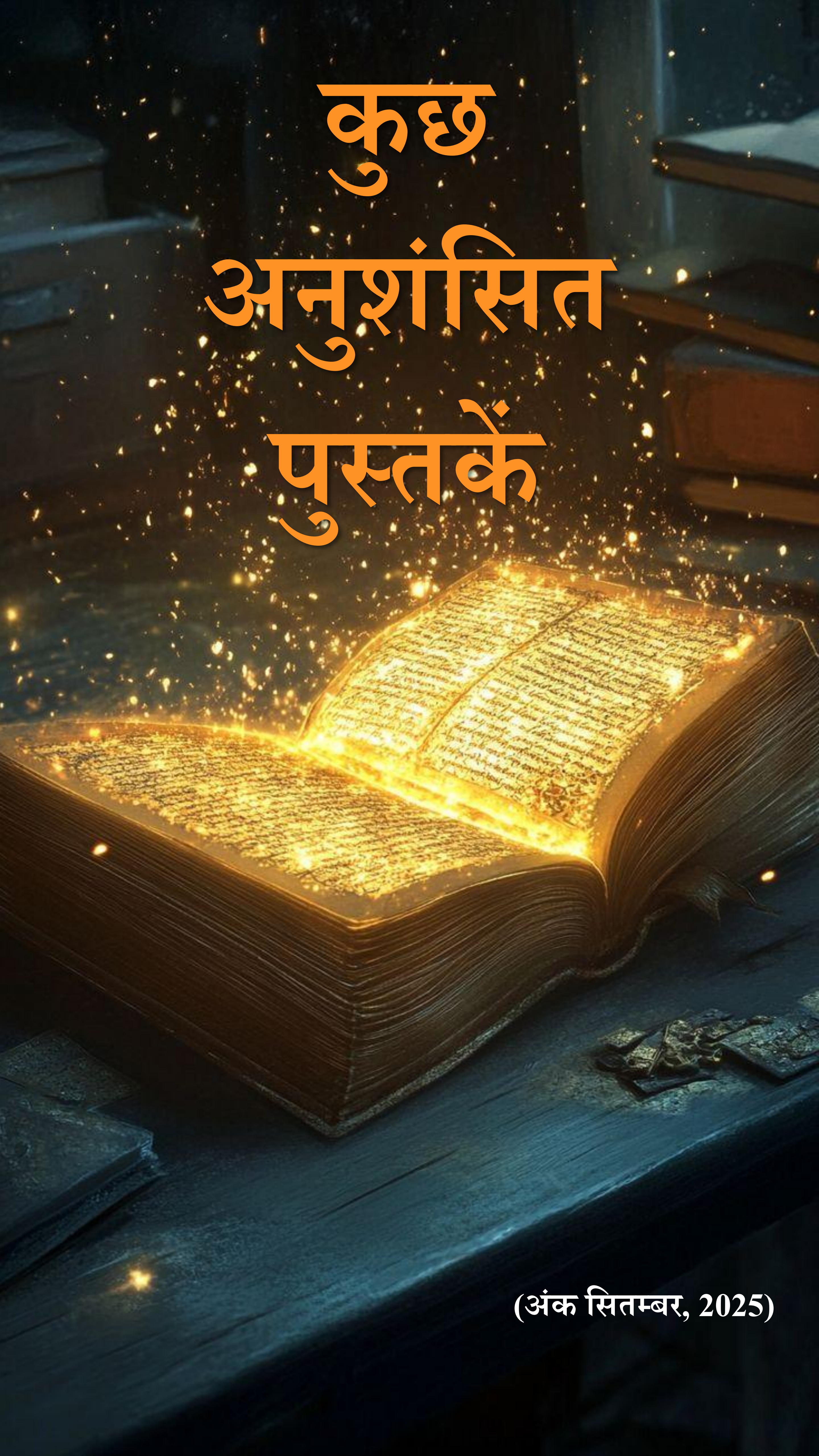

(अंक सितम्बर, 2025)

कुछ अनुशंसित पुस्तकें

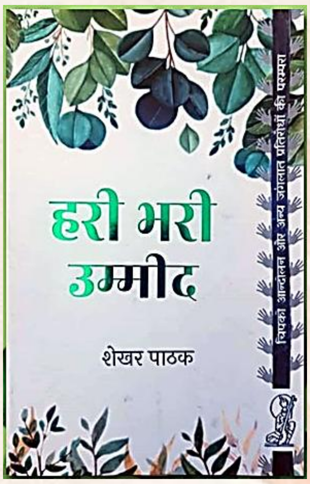

हरी भरी उम्मीद

लेखक: शेखर पाठक

चिपको आंदोलन पर एक जरूरी किताब:

चिपको मूलतः पहाड़ी किसानों का आन्दोलन था। वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली और भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला से प्रकाशित पुस्तक 'हरी भरी उम्मीद' उसी समाज को समर्पित है जो जंगलों के मायने समझता है।

पुस्तकालय में उपलब्ध

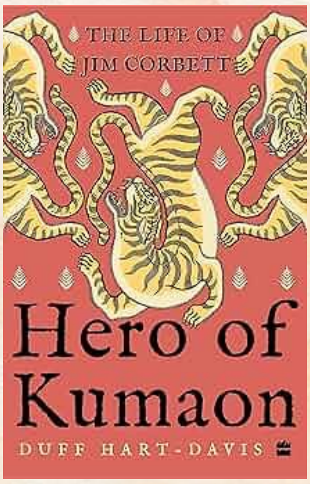

हीरो ऑफ कुमाऊँ

लेखक: डफ हार्ट-डेविस

यह पुस्तक जिम कॉर्बेट के कारनामों, उनके शिकारी जीवन और वन्यजीवों के प्रति उनके प्रेम को दर्शाया गया है। साथ ही यह पुस्तक कॉर्बेट के जीवन, उनके संघर्षों और उत्तराखंड की जनता के लिए उनके महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालती है।

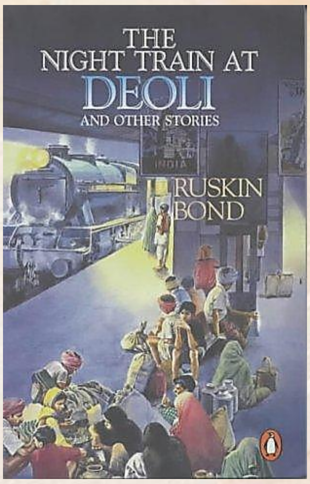

द नाइट ट्रेन एट देओली

लेखक: रस्किन बॉन्ड

यह पुस्तक उत्तराखण्ड की घाटियों का वर्णन करती है। पहाड़ों पर विकास की गति बढ़ने से कैसे वृक्षों की जगह ऊँची इमारतें खड़ी हो रही हैं और स्टील, सीमेंट, प्रदूषण व आधुनिक रहन-सहन के तनाव और चिंताएं इन लोगों की जिंदगी पर भारी पड़ रहीं हैं- इन सबकी पीड़ा की झलक इस पुस्तक की कहानियों में मिलती है।

उत्तराखण्ड पर आधारित उक्त वाली पुस्तकों में हिमालयी क्षेत्र के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक अंतर्दृष्टि प्रदान करने वाले क्लासिक विवरण शामिल हैं।

**नोट: अगले माह के अंक में उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में कुछ अन्य पुस्तकें आपके समक्ष फिर से प्रस्तुत होंगी।*

देश दुनिया
के कुछ
रोचक तथ्य
(अंक सितम्बर)

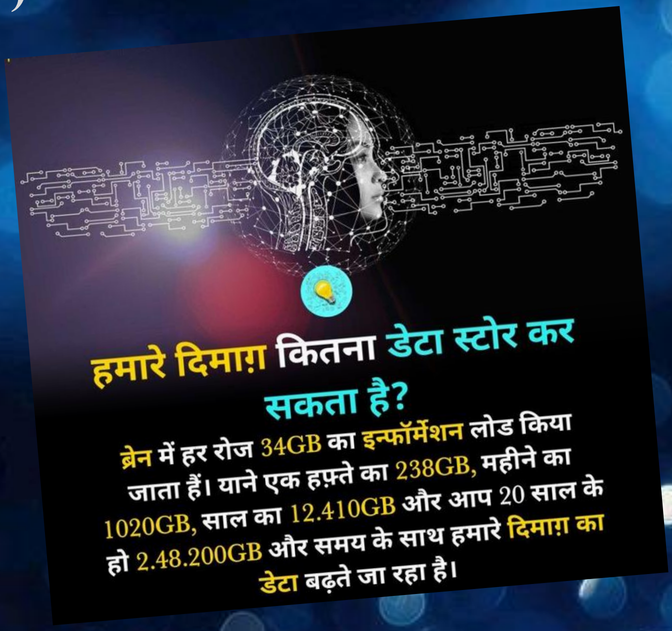
हमारे दिमाग़ कितना डेटा स्टोर कर सकता है?
ब्रेन में हर रोज 34GB का इन्फॉर्मेशन लोड किया जाता हैं। याने एक हफ़्ते का 238GB, महीने का 1020GB, साल का 12.410GB और आप 20 साल के हो 2.48.200GB और समय के साथ हमारे दिमाग़ का डेटा बढ़ते जा रहा है।

भारतीय नए नोट पर छपी तस्वीरें
₹10 कोणार्क का सूर्य मंदिर (उड़ीसा)
₹20 एलोरा की गुफा (महाराष्ट्र)
₹50 हम्पी का रथ (कर्नाटक)
₹100 रानी की बावड़ी (गुजरात)
₹200 सांची स्तूप (मध्य प्रदेश)
₹500 लाल किला (दिल्ली)
₹2000 मंगलयान

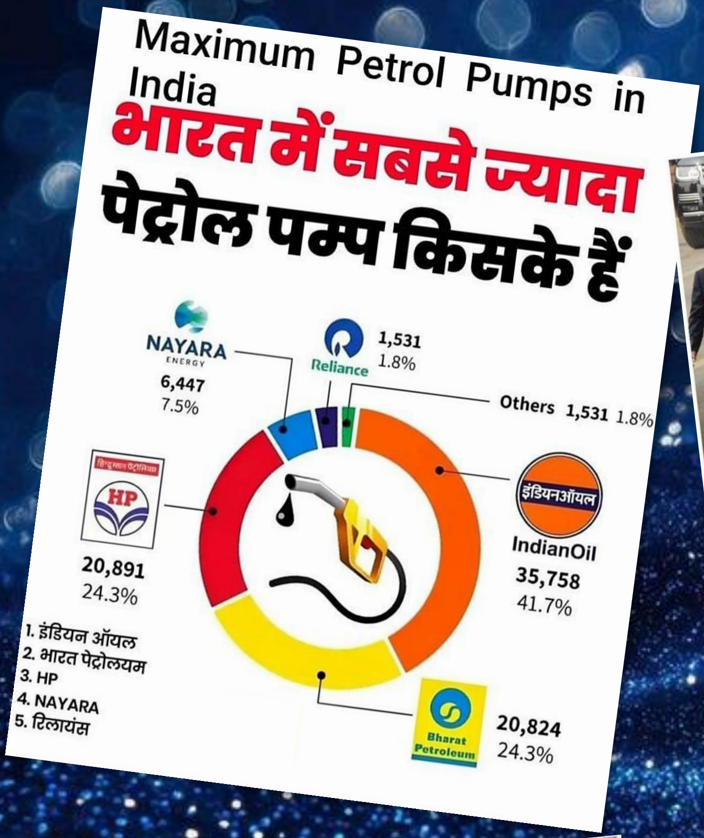
Maximum Petrol Pumps in India
भारत में सबसे ज्यादा पेट्रोल पम्प किसके हैं
NAYARA ENERGY 6,447 7.5%
Reliance 1,531 1.8%
Others 1,531 1.8%
HP 20,891 24.3%
IndianOil 35,758 41.7%
Bharat Petroleum 20,824 24.3%
1. इंडियन ऑयल
2. भारत पेट्रोलियम
3. HP
4. NAYARA
5. रिलायंस

क्या आपने कभी सोचा है कि bodyguards के बैग में क्या होता है और यह प्रधान मंत्री के साथ क्यों घूमते हैं? असल में यह बैग नहीं बल्कि एक bulletproof layer है जो चादर की तरह खुल जाती है और किसी अनहोनी में इसके पीछे छिपा जा सकता है। किसी भी अटैक से बचने के लिए यह सबसे तेज़ उपाय है।

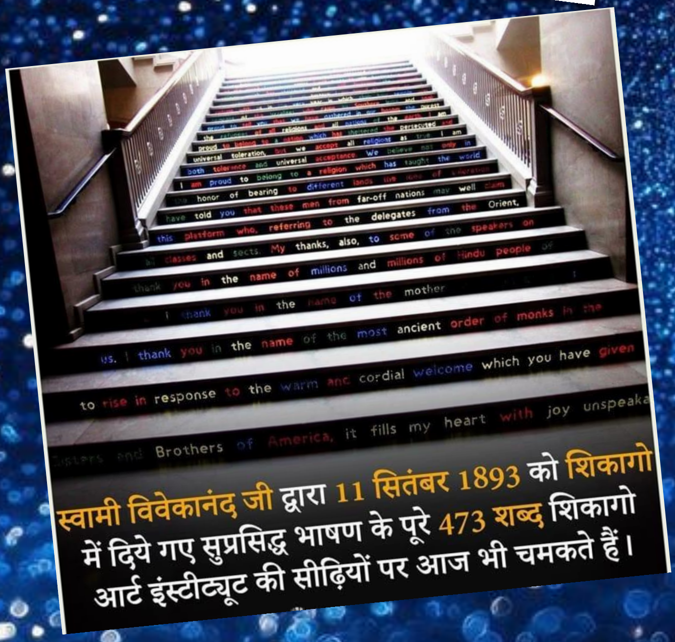
स्वामी विवेकानंद जी द्वारा 11 सितंबर 1893 को शिकागो में दिये गए सुप्रसिद्ध भाषण के पूरे 473 शब्द शिकागो आर्ट इंस्टीट्यूट की सीढ़ियों पर आज भी चमकते हैं।

@smart_factvala
पानी की बोतलों पर लगे अलग-अलग रंग के ढक्कनों का क्या मतलब है?
हरे रंग का मतलब पानी में फ्लेवर मिला दिया गया है।
नीले रंग का मतलब पानी पूरी तरह से प्राकृतिक पानी है।
काले रंग का मतलब अलकाईन पानी है
सफेद रंग का मतलब प्रोसेस या फ़िल्टर किया गया पानी।
लाल रंग का मतलब इलेक्ट्रोलाइट-संवर्धित पानी जो एथलीटों और फिटनेस प्रेमी के लिए।

रोचक तथ्य

Google Secrets Tricks

Tech Facts

- Google में Askew Type करने पर Google थोड़ा दाई तरफ झुक जाता है।
- Google में Google Sky Type करने से आपको पूरी अंतरिक्ष दिखाई देगी।
- Google में Animal Sound Type करने से आप सभी जानवरो की असली आवाज सुन सकते है।
- Google में आप किसी भी जानवर को आप Type करतें है तो आप उस जानवर को 3D में देख सकते हो।

Note- 3D Working Not to All Phones

1/1

शरीर के बारे में ये सब पता होना चाहिए

1. ब्लड प्रेशर	=	120/80
2. पल्स रेट	=	70/100
3. शरीर तापमान	=	36.8-, 37'C
4. कॉलेस्ट्रॉल	=	130-120
5. साँस लेने की दर	=	12-16 पर Mint
6. पोटैशियम	=	3.50-5
7. शरीर में खून की मात्रा	=	5-6 Littes
8. आयरन	=	8-15mg
9. प्लेटलेट्स	=	1.5 - 4 Lakh
10. WBCS	=	4000 - 11000

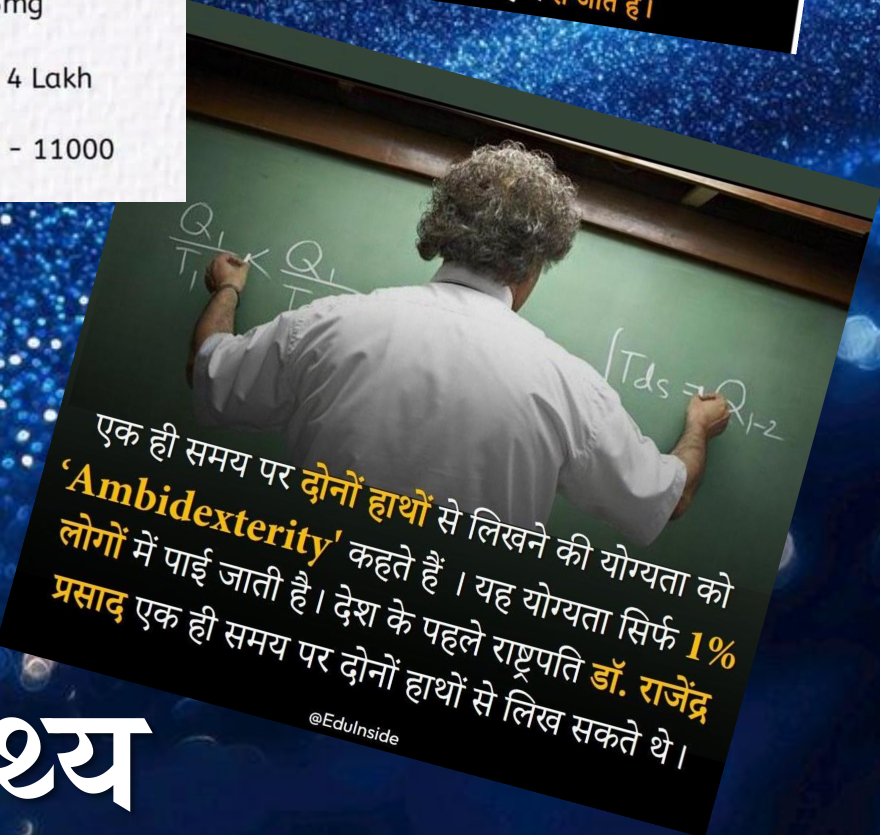

रोचक तथ्य

रोजगार
समाचार

रोजगार समाचार

देश में 2025 की आगामी परीक्षायें

विशिष्ट आगामी भर्ती (अक्टूबर-जनवरी 2025)

- **एसएससी जीडी कांस्टेबल (ड्राइवर) 2025:** अक्टूबर 2025 में अधिसूचना जारी होगी, तथा 2025 के प्रारम्भ में परीक्षाएं होंगी।
- **बीएसएससी कार्यालय परिचारक:** आवेदन 14 अक्टूबर 2025 को बंद हो जाएंगे।
- **भारतीय इस्पात प्राधिकरण (सेल):** सहायक प्रबंधक (सुरक्षा) के लिए आवेदन 26 अक्टूबर 2025 को बंद हो जाएंगे।
- **डीआरडीओ प्रशिक्षु:** आवेदन 28 अक्टूबर 2025 को बंद हो जाएंगे।
- **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण:** सलाहकार (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया) के लिए आवेदन 16 अक्टूबर, 2025 को बंद हो जाएंगे।
- **केंद्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण:** डेटा एंट्री ऑपरेटर के लिए आवेदन 26 अक्टूबर 2025 को बंद हो जाएंगे।

अधिक विवरण कैसे प्राप्त करें

- **रोजगार समाचार:** रोजगार समाचार आधिकारिक अधिसूचनाओं और उनकी तिथियों के लिए एक प्राथमिक स्रोत है।
- **परीक्षा पोर्टल:** करियर 360 और करियर पावरजैसी प्रतिष्ठित वेबसाइटें भी सरकारी नौकरियों के बारे में अद्यतन जानकारी प्रदान करती हैं।

उत्तराखण्ड में 2025 की आगामी परीक्षायें

उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

- **सामान्य समूह सेवाएँ (कनिष्ठ सहायक, निजी सहायक एवं अन्य):** इस परीक्षा की अधिसूचना 5 दिसंबर, 2025 के लिए प्रस्तावित है।
- **आईटी/कंप्यूटर/डिज़ाइन से संबंधित पोस्ट:** इन पदों के लिए अधिसूचना 24 दिसंबर, 2025 के लिए प्रस्तावित है।
- **स्नातक स्तर के पद:** इन विभिन्न स्नातक स्तर के पदों के लिए अधिसूचना 21 जनवरी, 2026 के लिए प्रस्तावित है।

अन्य महत्वपूर्ण परीक्षाएं एवं जानकारी

- **प्रधानाचार्य/उप-प्रधानाचार्य, एल.टी. शाखा/अनंतिम व्याख्याता विभागीय परीक्षा-2025:** माध्यमिक शिक्षा विभाग की ओर से यह परीक्षा जारी है।
- **राज्य लेखा एवं सहायक परीक्षाएं:** 12 जनवरी 2025 के लिए निर्धारित, यह लेखा विभाग में पदों के लिए है।

अपडेट कैसे रहें

सबसे सटीक और विस्तृत जानकारी के लिए, आधिकारिक वेबसाइटों पर जाना सबसे अच्छा है:

- यूकेपीएससी: psc.uk.gov.in
- यूकेएसएसएससी: sssc.uk.gov.in

'बिन्ति'

म्यर मानिलै डानि, हम त्येरी बल्याई ल्युँल।
तू भगवती छै भवानी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल ।।
ककलासौं बासोट नौला, बिनैका उछाणी।
दुनगिरी नैधणा पाली, पूरब उज्याणी।
खुट धुँछ गंगा कौ पाणी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल।
पच्छिमै सरद पारी, गढ़वालौ दुसाना,
धूमाकोट दिवायला, गुलारका डाना,
याँक वीर सल्टिया मानी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल ।।
तलि पूजि भूमियैं थान, हरु हितै थात।
डडुला चम् कन् क्वैराला, सैणमानुरा माथ।
सगनण सदर अनी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल ।।
मलि पुजिया पचपौला, जौरासी देघाट।
गुमटी मटेला स्यालदे, चौकोटै की फाट।
डानी सब त्यकणि चानी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल ।।
द्वी थानों का बीचों बीच यौ रुपसा डानी।
एकमा सरस्वती रैछ, एकमा भवानी।
गर्जनि घनैला ! घानी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल ।।
इन्टरा करौछ त्वीलै 'काठों' कौ इस्कूल।
'डिगरी कौलेज' देवी ख्यलों हरौ झूल।
सब नन् चैरई नानी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल ।।
मैं छौ 'हिरू' डढोई कौ पीड़े की गढोई।
त्यर खुटां तव ल्यै रौं पीड़े कैं बटोई।
मेरि 'बिन्ति' जये मानी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल ।।

–स्व०श्री हीरा सिंह राणा जी को सादर नमन

"सा विद्या या विमुक्तये"

कवर डिजाईन: डॉ० शैफाली सक्सेना